# THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

## FILM—STRIP NO.
## MBB—1971— 275-152

# BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB - II

MBB- 1973- 275
1. Film strip number

80
2. Source

DĪKṢĀVIDHĀNA
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

6. Name of Scribe

NEPALI PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEWĀRĪ
8. Script

22 cm. x 8 cm.
9. Size

6
10. Lines to a page

61
11. Number of leaves in complete work

12. Missing leaves

13. Author and Date of composition (if given)

14. Number of Chapters

15. Remarks Ritual convocation after study, with Dharma way

Jan 20, 1973
Date photographed

ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय॥ ॥दिक्षाविधि आत्मसाधना॥ गुरु पूजा विधि आत्मसाधना॥ कलश स्थापन

वैरोचनादि तिर्थ पंचगर्भ कलशा॥ दिव्य कम्ह याय्‌ मार्ग न्यायना॥ आदो सूर्य विधि गुरु मण्ड

ल दक्षिणि पूजा मण्डल सं वज्रयासी धन लाभादि पूजा वृणि पान पूजा मदनि दक्षिणा॥

ग आदि समय॥ गुरु लायिल॥ दि [illegible] ॥ शिष्य माशि॥ कलश पूजा [illegible] पूजा॥ स्नान थि

यात्रा कर्म॥ शिष्य गणपति ह्मवान ॥ गुरु मण्डल [illegible] पूजा पंचगव्य विधि॥ दा

वना॥ निर्जन लाभ [illegible] मण्डल दीक्षा॥ पूजा याय॥ [illegible]

कनौक्रिस्सवशामिद्दनाथत्वंसभ्यर्श्चामसाविशासर्द्धैमलानसंसानसायनाहृहुलमसाजाल
ग्रेलिलापनार्थं पूस्याकैदूजनाय        वंदभाहिषकूर्याविपूनस्थर्थमकूसकुलयुंव
हितैवाहासैवाकूनिश्चामियस्था        लियकृञ्वंगैस्काकीवी ॐतिश्रियारवकलाा।न
लसगुलरादृलया।।काद्वैअक्षप        धाहासर्वेसाहृलनस्थैपूर्यासंलगवदूश्रीरदि
दूक्षल्दानकायगुश्वनसणकाम        स्वापूत्रपैद्रानिकस्वाहा।।सगुलभिस्तारहुःकोज्ञा
हिर्वाविज्ञाद्दकाला।।किकु।।दिदुवमसपआदिदकाङला।।        ।।कुःभिगुवपूजाविविस्मृमायका।।        ४

सकर्षी २

ॐ नमः श्रीलोकनाथाय॥ ॥सुखावतीविहाराय॥ कल्पशतसहस्रनाथसमन्तलितांग॥
यवगन्ध पाय॥ नमो भगवते ... कल्पवृक्षादिकाय नाथाय॥ नमो श्रीसूर्यांगुलमञ्जु
सर्वांगशोभन॥ श्रीधरमञ्जुसथिसल्कवि॥ त्रिसमाधि॥ कनकमञ्जुश्रीदिव्य
गाढवयोगी॥ श्रीसिद्धिगणपतिं ब  मञ्जु नमञ्जुलहनको॥ समयपूजा॥ नावनाग॥ ला
तिनवकालिसीनकाये सगध्यवि  २  य॥ बुद्धमञ्जुल धर्ममञ्जुल संघमञ्जुल सहायुनिय
लवासवाय॥ नमो भगवते मञ्जुलकासकलनाथाय॥ नमो भगवते मञ्जुलसर्वज्ञानवायका॥ ॐ नमो

घटाल मञ्जुसा सर्वविघ्नान्नासमन्तु ॥ ॐ कुसुमाय पालला कल्प वाय वज्रपुष्पं प्रतिच्छ स्वाहा ॥ः
स्पुष्प ॥ शं ॥ ४ त्रिलाकविजयाय वज्र सामायाभयप्रमिदनक्रीश्रह वज्रपुष्पं प्रतिच्छ स्वाहा
कुलानां ॥ ॐ कुसुमाय पयानलाकल्पवा: य वज्रपुष्पं प्रतिच्छ स्वाहा ॥ थश्यना ॥ ॐ आर्यमान्या:
य वज्रपुष्पं प्रतिच्छ स्वाहा ॥ स्व ऊहा ॥ ॐ आर्य स्रग्व वज्रपुष्पं प्रतिच्छ स्वाहा ॥ कृत्वा हा ॥ ॐ आ
र्य समाय कुलाय वज्रपुष्पं प्रतिच्छ स्वा हा ॥ कृत्वा कोना ॥ ॐ आर्य स्ध वायव वज्रपुष्पं प्रतिच्छ स्वा
हा ॥ कृत्वा कोना ॥ ॐ आर्य हस्ती वाय वज्रपुष्पं प्रतिच्छ स्वाहा ॥ ऊर्ध्व पूर्व काना ॥ ॐ आर्य सर्व सौम्य पीत वस्त्रविः

५

सिंहाय वज्रपुष्पं प्रतिछ स्वाहा॥ ज्ञानपन॥ ॐ आर्य वैश्रवणाय वज्रपुष्पं प्रतिछ स्वाहा॥ कुवेरपन

॥ पंचाय वाजपूजा॥ स्तुति॥ लोकेश्व र्यं भिवं श्रीकंजू श्रीघनुजस्तागतं ज्ञसिंहास कुणी

मौली नमामि जूश्रीघपाश्विनं॥ कीः कावस मक्क वनाथ कजू नाथ क्लिश्च मानसंजू श्रीघ

पाशं सामानं लोकनाथं नमामि॥ ॥ वृक्षमणु नमस्तानथाग्र॥ ॐ वृक्षमणु नमस्त बाविः

श्वानुस्तावर॥ ॥ ॐ आर्य वैना यनाय वज्रपुष्पं प्रतिछ स्वाहा॥ कथ॥ ॐ आर्य कत्रु

श्रीध्याय वज्रपुष्पं प्रतिछ स्वाहा॥ द्रव्यना॥ ॐ आर्य वसुसंवाय वज्रपुष्पं प्रतिछ स्वाहा॥ कजा॥ ॐ ३

...र्यप्रज्ञापारमितायै वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा ॥ [illegible] ॥ ॐ आर्य [illegible] वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा ॥ ॐ
[illegible] ॥ ॐ आर्य [illegible] वज्रपुष्पं प्रति च्छ स्वाहा ॥ [illegible] ॥ ॐ आर्य [illegible] नायै वज्रपु
ष्पं प्रतीच्छ स्वाहा ॥ [illegible] ॥ ॐ आर्य [illegible] नायै वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॐ आर्य [illegible] नायै वज्रपुष्पं प्रति च्छ स्वाहा ॥ [illegible] ॥ [illegible] पूजा ॥ [illegible] ॥
[illegible]
[illegible]

क्षयकरस्यै नमः॥ ॥ॐ इहं वज्रनामा एवं द्वमिनाये यथ्यहूं मदिवसेसमूपायाकायधारणावामिन

धुनिरवधूलात्यूहूंतगवकेंसनावा बुलिकं सर्वेहंसर्वेदर्शिनीसर्वे त्रयायाचिवांम

८ हातनुमपंत्रवयकायंजुनकनहा नकायंसनर्णंगक्कमिद्धिपकानामप्र॥ १॥ह

र्वाइमसेम्सगुणसमस्तानवांपक॥ ॥ओं धर्मधातुसर्वविद्यानुसारकः॥ओं आर्यप्र ४

ह्रापारमिताधेवजूप्र्यंप्रमितं स्वाहा॥दश॥ओं आर्यगण्डव्यूहाय ४॥ ह्लुसा॥ओं आ

र्यदशभूमिश्वराय ४॥ दश॥ओं आर्यसमाधिराजाय ४॥ थश॥ओं आर्यलंकावताराय ४॥ ओं आ

॥ॐ आर्य रत्नकेतु गुली काय×॥ ... थ दुं॥ॐ आर्य नत्य सगनगुरु काय×॥ ... थ दुं॥ॐ
आर्य सर्वनीवरण काय×॥ ... थ दुं॥ ॐ आर्य समन्तभद्र काय×॥ ... दुं॥ ॐ
पत्नाम पूज ॥ ... ॥ ... आदि का दुं खन मपसहसां व हृयत ब्राह्मिनां यरा ...
... बल ... सर्वा ... साद पं मिजत्रा नं ब ... गं ... मं ... सम्प्रबुद्धाय ...
... ल बा ... ... मसे न म॥ ॥सा ... ब ... :
... ... ... ...

विसागनामयं॥ ॥श्रीलिसंघमञ्जुलसस्थानकाय॥ ॐसंघमञ्जुलसवैविघ्नानुस्मरनम्॥ ॐआ

र्यावलोकितेश्वरायवज्रपूजांप्रति ष्टस्थानका॥ द्वथ॥ ॐआर्यमैत्रेयाय स्वाहा॥ कूजाचा॥ ॐआर्य

४ सुगगगंजाय स्वाहा॥ वनजासा॥ ॐआर्य समन्तभद्राय स्वाहा॥ थजान॥ ॐआर्यवज्रपाणये स्वा॥

ञ्जुश्रीस॥ ॐआर्यमंजुघोषाय स्वाहा॥ खगाकाथक्वी॥ ॐआर्यसर्वनिवरणविष्कम्भिने स्वाहा॥ क्षिति ग

थथूक्वी॥ ॐआर्यक्षितिगर्भाय स्वाहा॥ क जाथथूक्वी॥ ॐआर्यखगर्भाय स्वाहा॥ जगाकाथूक्वी॥ यंथाः

यहानपूजा॥ स्तुति॥ वन्दामहे प्रीतिमनोवकाशैर्वसत्वसत्वादविघ्नघि ८ वन्दामहे स्वर्लोकिनामसमन

ता शान्ता मल्ला श्रागिनष्ठ ॥ ६ ॥ सु त्रुं व नयूर्जला मूल गवनायस्मि गलव्या कृताग्र हाभी सरमाधित

घवयूध सं श्रायन स्मे नमथा स्ना ॥ ह मत्र ना स्ना एवं दणिना स्य यं ॥ ७ ॥ सा दिवस मूः

ताश्री यावदा वाधिनुरुविसत्तु नाकूत्र वं वा लि कवाधिमत्त्वसंघ से नभगकालि

गणनल मस्थ्रां ॥ ॥ स्त संध्यारु नं शुसां व ॥ दिकू शा क श्राशु स निधनिना वू चारः

गव का बाधि सत्वा सवज्ञा का याया ध्वा ल्व शूरू मवे ना माय गु कि विनू का यवा कूम

श्रारि ८ सर्वत्रु कुर्याभिसत्वानुस्मा नायिनशों नदं व्यानूसगसय ॥ ७ ॥ हज सा नि रत्नों कन यू सर्वांवा

यथं सर्वकृतं कायिनं नाहं वपूनानर्वसर्भसंक्ष धपितुधिस्वा तुसापिस्या सर्वबुद्ध बोधिसत्वानामाया
यस्याक्षि वजुत्रमा वसया पृतम स्या प्रतिदभनायानैजोनंस्मव भप्रतिक्ष दपाति
॥ ... भिसं वा त वलतदकृपथ भजूर्याजूर्वकयावर्कि वग्राणभिमियामंग्रतिविवः
गाविदस्वदज्ञाभिदस्कणस्कालूः क्षिशाक्षयावक्रासर्वसलाभूज्ञाणिदजभुकण
कृकय पिपीहिकामूयाकयवीर्य वभवाहक्रूवतामूपाकरायानाबज्ञ वाग्निभमिनीया
वयंबाद्दस्यूसिंयाकथप्राणभिमातंप्रकयप्राणभितियानानुप्रतिविजमाभिप्रभिदकृदभ

सिद्धलेभक्षाः लक्ष्मि नादयाव भासर्व्वेस ख्यमुद्राणि [illegible] मृतुक भः वाक [illegible] यिवीसिका मूषाः
सायत्रिवन बार्द्धप्रथ [illegible] नां गणः [illegible] भषासावायोणा सद्ध [illegible] यमनतिप्रसनवि
भीयक्षनूकनासा ॥ [illegible] ॥ यूनव [illegible] यवंसमं व्याद्धवंवदक यथा [illegible] कार्य्यो सुर्द [illegible]
वाक्षिवंसूक्ष्माधानं सूक्ष्मा वर्य [illegible] स्वा वादंसूवासे नयय सप्रप्र मादसव तंक्र स्वामी
नं [illegible] त्रिनं भालागल्विविसपतं [illegible] कसूसगभवा नगीठ [illegible] यवंसवा गयनसूका
नमाक्षवं प्रभायसूका सवलाक्ष नापु प्रतिविव नाग्निवमवाक्षं सूक्ष्म कानासा [illegible] मांवलामयाः

नाययाव व्रजसूर्याद्ययाकमभ्यदलानानंश्रव्रभानवर्यीम्हरवानादंसनामैश्रयसयव्रमादस्व
नंबस्वमीननाथिनंमालागमः ॥ विलप्रजंवस्कहमंपणधानवर्णाठ्ठवगयनंसहा
६ भग्नदंजूकालश्वाउनानुप्रतिवि ॥ वमासिःश्रुमनाद्रुथमनांगलक्षयांमार्याणमः १
हतांकिक्कमनमिघ्नमनुबिश्लीयव ॥ जुनुवनासि॥ ॥ज्रर्घाजंमनरजिघिश्कवर
यवरदमरक्वारहीरहूंरजंकामः ॥ व्रक्कवमयनरधिविरधुयरनयरसमनरववनरव
श्लिनमायाहरुत्रयाग्निसाङ्तिननवीनश्चालरगयररगवनूशामादिलयमवनूलकूवनव्रः

क्षुं जयि दन्त णात्य र्श्रिन्ज व वण कमलाय न्र्धिंष्ट्रुमिंक्ष स्वाहा॥ ॥वृनकाय॥ ॐ सर सर सर
ह गवन क्ष्व र स्त सयमन स्वान हूँ हूँ रू रू स्वाहा॥ २ ॥क्रियाकाय॥ ॐ नमाम ब
ध्रयाय॥ ॐ नमाम्रु नीव लाकिन ः स्व स्वाय श्रीविसत्वाय महासत्वाय महाकाय॥ ॥त
घ थ्या॥ ॐ भ्रमाय नीलश्रुवसत्वा ः हर हर स्फुल र स्प प्रविच्छ भिणा मंक्षु ज वन सम ः
का द लाकि न ष्व त्राय ॐ जां हूँ स्वा हा॥ क्ष र १॥ वलिविधि॥ ॐ अनु माय पाल जीं स्व वि ः
ह क्ष स क्ष य मृ ज प्र ह क्ष वा धर्म तय क्ष्म सर सर रु का त्रां आ कि पृष्ठि व मं ठ कां कुं व हूं स्विन्नि स्वाहा॥

न३

सा कास्मा॥ मंगुरुलक्षिसा॥ कुलिं॥ ज्ञाश्री यदा॥ ब्रह्मकाम्ययां॥ मंगु रूया॥ ब्रा नवा जा स्वनया॥ त्रिन
मृत्त्वा कज्ञ॥ किरु॥ यंस्रां रक्षण॥ शुला क्रन॥ धर्ममूलिया॥ सकलया॥ क॥ श्रुतिमूर्ति
५ ठुजनत्सक॥ ॥ श्रीखिन्दा दुंठाय काया या॥ धूल मंगुल धांपि कलपाधां॥ ८
शण कलण॥ श्रीमकृष्णा॥ मलमशु स्वबकम पंचगय पात्रपूकडु॥ याग नविंतला
कमां शुद्धि सुकल्पया॥ क्री॥ [illegible] बहिरखाधि स्वल्पिध्याजि रक्षाय जा या पूर्ण॥ पूलावा
मैयाऽवक्षधं धूमा॥ उया॥ ध्या या॥ वेन्नजा सनया॥ जज सा नया॥ ध्वक्षस्नता॥ चंमि [illegible]

गुरुमण्डलदना॥ पंचगव्यस्नान॥ सिन्धूरगया॥ आदिपूजादव्यप्रक्रियालाक्षा॥ जुंजनलाभः
ना॥ अग्निस्थापनयानालज्वाय॥ म [illegible] गुलस्थिला॥ स्तुति॥ नक्षित्रनमस्कार॥ अर्घार्जन॥
त्रिरतन॥ बलि॥ उदात्तनाभि॥ तंयूजा [illegible] कलशपूजा॥ गणसाधनपूजा कलशमण्डलनानमकु
दादिन कलशपूजा॥ श्रीलिङ्ग [illegible] पूजा॥ बलि॥ श्रीपूजा॥ श्रीलिमण्डलपूजा॥ विविश्री॥
थीरि [illegible] लावलि [illegible] धूनदला [illegible] उपलाजयाजन्त्र माषपालला कम्बल याएक लाः
व पशुलक्ष्या॥ दक्षिणा कलशकलश एकासाना॥ गुरुमण्डलदना॥ एकश्चातमण्डलपूजा॥ स्वसिध

नक्ता॥ निद्धावेिंद नवा काउ मसंजु सकनका॥ र्यं सिरत कन्ना॥ गंधाणि चमकं छ्रौनस्ट्वांकु न:
मंजुलानसपू आंजसी नानदस्स कसुनयार्थ त्राणिय वसा कासुदयायकिंकुन
धगगन्क व्रयसंमनुप्राकथम जुसुप्रव भः कार्यगामध्यसकासुदयदूयंस खती
तिअवधि वाणुव नाास्वनबी व मस्थ नुयालिवव आणिगेरयपुलयमन्कानक
बीजनिव पाभुंहसप्रहाग थाग नौदुखीहुवे तामिरिकानुत्रीसंवव नुय ।अक्लो
मजुरसपुर्वेवामडयाविथग्रुभसंयाश्रय॥ तिवानसद्द जनमजआनकुमकवाहेरयानक्ता

तु॥ण नाह्न अक्रउ जले नि व स्क श्रा स्का स ह्मा क्ष ण॥ ॥ वृ [illegible] स्म हा ना थ स का बा श्चि न र्य हँ ॥ द्वि
श्रे स्व स यं न ल्लं बा श्चि वि ह्न श्र द हि [illegible] श्रीं यु ज म र्के व हं घ [illegible] हि म श्र न ण प्र ख ॥ ख्ते
ब श्र यु स्व मा ना थ श्र हा मा ज प वं व [illegible] वं॥ ग व ह्मि ष म कं प्र श्न नी क त्या॥ [illegible] ॥ त्तैं ञि व
ल श्र हा या न स ञ्जु व र्यो न श्वं बि ब्रिं द [illegible] भ वि श्चि ग सं य फ न ल्ल स का न या॥ वृ ह्या श्रि य
[illegible] का य ना ह्मि क व गि नं॥ [illegible] स्ता प हा न मक्त हं व ज म ञ्जु प्र त ब नेंः श्रीं क्षु या
ग स ञ्जु स च य न स नं स हा व ल॥ मा न स व्यं स हा या नें ना क ह्मि ह्नि [illegible] श्रि व लें ॥ सा का वृ [illegible] श्चि ना ग

यथ वक्रयाभिर्लोनिरुकांश स्मान्मशिनि मास्मस्य कवसर्धेहस्याफ्य॥ २ ॥ वेमानस्त्वप्रयंस गजसं
स र्ध स्माशिन्दिभ्मास पांजून साद्धजग सुप्यंव्र न बा॥ वेद्ध समा॥ ॐ गिधि स्त्रिष्ठया ० य न्नाॅ॥ पूव
मध्य यश्मा॥ वक्रद्वै नर्ल्य सस कंठत्वा नाथवद्द सभाव क्रधवजन यास्त त्वनावार्ये यभि:
क म्ये वा॥ स म यं स च्चैव्र ज्ञानांस म्व: वं गुरुक्रसूक्ष्मसां॥ स्त्रानार्येश्च त्वासद्र निात्यं सर्व्वसत्वा
र्थ का व ण्नूनन मावाभिद्धिलाया दवंकानय॥ सन्स्माद्भवं कुनीवृज्ञा॥ भिनस्ता
प्रदस व कनामा॥ ॐ माम्बलासूयादाय यावद्वावाभि सगु त्तानि यगु आहा॥ उवाद्धयानियवसंवाधि:

१०

विकसत्कमलीयधात्रे यक्षकान्ता थश्मसंबोध्यौ कमनिश्वयामात्रिबिकां शिरसि यक्ष कु कुमलं सम्मं
संयदं सत्वार्थक्रियामीसंप्रति … स्त्रीयस्य ह ं ८ दं वृ ज न म्मं श्रसं घं नप्रित सान्नम
न्नुल वाग्वास्यन रहीयामि सम … वंवृ न्नयागजौ ज घन्नीं नमृ गा कु भिय न्नामि
नख्वाःक्षावायं क्रु रही यामि म … स्वावज कुसाय यावन्दु दीन मुदा यामि मह का
कुमिन्नःदिनामसान लाकु स यांः … त्यसमय बम नासमा सिव ं स्तुमि रन्नामि वाका
सुर्द्धं पियामि कां मदाय प्रकुसं सुज्ञ मवा वामिसमहधासमन्त्रीं वा र्धे पूर्क प्रीणयान्नामि सर्वः

ण्ठ।पूजाकर्म्मयथास्थामद्याकर्म्मकृत्वाद्वयाऽउत्पादवीत्वायवर्म्मबाधिविकृतमनुस्कनीयक्ली
लोसम्यबीकृष्णुसर्वेसत्वार्थकाः वर्ण्णानाऽस्तुनीभूस्तानयियाभिसूसूक्कानमानया
८ म्यर्दिप्तुनाण्वस्तानाक्षासयिष्टा मितवैसत्वानुस्तायपानिर्कुनी।।जनानम्नकृतु
सिमर्थ्रणानक्ष्मा।।ांस्वस्तोबाहकृं कृ।। ।।लवलाा।लमांकृत्काण्पृसिवस्पूकजय
मवक्राणाविसूर्यहूयेवउस्तानि हसर्वेवउवउस्तानिवाकृष्कूवकाण्डुज्ञानि।।दृः
ज्ञाःणां।।कृक्राशिविकयिल्वामानुध्रानयिसूकृकाण्ठुनिनांपिगन्धाक्षकाजयूकाजस [illegible]

स्व नुष्ठिता ॥ हूँ स्वा ॥ ॐ ह्लूं सिसक्रूं नीलह कं ओदेवा ॥ ॥ जुय्य मा छ सूय श्री यं द आ नु ॥ ७ ॥ अव
द स्व [illegible] कादि द क काह्नू क्षादं ॥ हुंसं ॥ ॐ वज्र कास हूं ॥ ह्लूं सि स क्रूं णप सिन म व सं
[illegible] कृ तिवय जन रि स [illegible] क्रिय लिसगु ल्ला [illegible] क्रू ध ॥ ॥ जमा वं का य ज म [illegible] ले
न रु हू स्या व स त्ता य द त्वा व हूं क त्र थीं ॥ ॐ श्री श्रीनि [illegible] धर्म सर्वे या या मा नि वा स्कृ ष्म
ध य स श्री लि कन्या [illegible] य त य हूं ॥ ह्लूं सिस क्रूं थ ० न या म [illegible] ॥ ॥ जमा ॥ हूं श्री व
हू त्र सव वा हूं य ना ॥ वं द ह्लूं सि [illegible] स स नी व य प्र श्री णी व क हू [illegible] गु ली कनी हूं ॐ आ व स सर्वे कना

द

व स फ [illegible] प्रि य [illegible] कु गी ॥ ॐ वृ न्न से गी व [illegible] स [illegible] ॥ [illegible] णि य ० [illegible] व्यो न श्री द [illegible] ॥

स ह्मा स न सं नि व स्या [illegible] क क स्य ‖ का टि हि ये [illegible] पा य के पू ना ग स्त वं दि [illegible] या

गि [illegible] स सु स गी [illegible] ॥ [illegible] ना ः ‖ [illegible] गि [illegible] षी स [illegible] स्य स म्ह ना य षी व ये न म

धा [illegible] ति व स्य [illegible] ति [illegible] ला ॥ [illegible] ‖ ध यू [illegible] व ठ ला ना ला ल [illegible] न ला [illegible] ति श्वा य न यू ः

ये [illegible] स [illegible] स यू गे नि द श्वा स न ॥ ‖ [illegible] पि [illegible] ली ना [illegible] आ य मा ना स [illegible] ति [illegible]

न यू यं स सा या न स ञा ना दि रा वि [illegible] था ॥ [illegible] सा गे व [illegible] श्री सा नू स [illegible] या न स सा द [illegible] य न [illegible] ः

श्री

गस्त्रिक्ष क्षाहतिय्य थग थ्या ग ता।। हुनितिश्राबायित्वा।। ।। ॐ वीक्षनजमी क्रुर्थ।। हूँनिमक्स

कूलवाहरुंदयाह्नि स्याय।। ।।नमोक्रुसुरीमजुंकथयित्वाप्रानसूरुक्षप्रीका थयि

क्षत्वशहिक्षप कूटाम्पथादर्थ मगुसहमिपर्यर्जुंवमनिकाख्कनाहृरुप्रसिदा

मर्याधीस्वाप्रयत।।नमोमगुर गहंगस्वावर्ष्याधिहिश्रक्रुतिंक्तुस्वामगुसीतिसर्हः

यद्विलिनिष्याधिवास्तनविमि।। ।।नदक्रुगुसुरुप्रप्रथवलिदवामगुसगहानिश्रर्ज

स्यनिध्यारुष्ठप्रष्काजिविप्यानादिस्पतिमागुरस्रप्रकृगुरीमज्ञुमावक्त।। ।।नमक्ष्ज्ञावार्थ

समाधिस्त्रयं कलशार्घं जलं दत्वा मण्डलाधिवासनादि विधिना कुर्य्यात॥ ॥सगुणमण्डप्रः
वेशकालनिर्घोषः॥ ॐ प्रविशन्तुर गणा नमस्काराकपूर्वं सर्वसिद्धिसुखप्रदं परम
सुखालक्षणसिद्ध्यर्थं ॐ ह्रूं नमःस्वाहा प्रः सिद्ध्यर्थं सूत्रादि नत्वा विश्वप्रदक्षिणेन स्थः
८ क्रमशः॥ यथा विसाधितानाम प्रः क्लिशामेते उक्तक्रोधिकाना आम्॥ ॐ वज्रा घाट १२
यसमस्तप्रविशन्तुहुं॥ हूं जिनप्रकू घाघसपुष्पमाला॥ ॐ यवनमसुखाशमसुखालिन
विलासनमिनेन्द्र मानिराग वकं ॐ ह्रूं वंशाश्रदिदिदिदिदी॥ प्रतिसकुमारीज्ञानाथमापि

सिद्धिज्ञानमण्डलपरिगोष्ठीत्वास्वामियमितच्छा ॥ स्त्राकालाभ्यादविक्रस्वादवादिः

सिद्धलक्ष्मप्रभासदातजसय्यः [illegible] सत्वार्क्ताख्यवजाप्रसिद्धम ॥ सर्वोत्कमनदा

सिद्धिमाहेश्वर्यासिद्धवनद्दास्त [illegible] सेवजधवभाभाजासिद्धभेयनस्ताजवस ॥ तिर्थो

यदः ॥ वतक्ष्मासित्सर्वेनायमतुः [illegible] वागप्रश्रासन्वनसिद्धमत्वगवश्लादावात्स्याम

नावमहाभूत्वमतुध्वन्वर्मोग्र [illegible] ज्ञादिमकत्वयगगहासमनकल्पश्रत्वर्गोस्मा

वेः सितत्वप्रसिद्धमन ॥ सर्वोत्कमनदासिद्धिमाहेश्वर्यग्रमाह्वया ॥ सिद्धवजमनदाक्रवो

त्र्कगर्भ्यत सम्॥सर्व्वसत्वक्षनाब्यायिसर्व्वसत्वस्य॥दिक्षिणः॥सर्व्वशुचिनाबेतक्ष्मासात्र
श्वक्ष्यग्निर्भी॥यतसत्वतर्सं लार्वप्रज्ञापायात्मसगुरी॥भंतसत्वतसनाथ
८ कमास्वर्यविमूतय॥ॐगि ःप्रवक्तिर्भ्यप्रागित्रिस्वसमाथक्षोसुक्ताः॥गु ली के १६
नाविलाः॥सुयाक्षातविसाध्य ध्वद्गुके र्म्मसमद्दवा॥ ॥तथताम्रर्क्षे ः
त्रिर्य्यात ॐ गितत्वातसगुरी। प्रगित्रिर्धी कुर्द्दसिध्याः॥सर्व्वपथ्यंत्वक्तसमाः॥
॥ॐगियप्रर्द्दयभवैसेलाक्षसगुसंप्रर्भस्या॥ ॥ततः॥षिंद्रसाउतयज्ञार्कैदसातु॥

ननामसुलासामावदूर्ष्ठजायसलाजनीदयात् ॥ नूत्वा नार्यप्रव नविधि ॥ ॥ समावि

कालवसायींयुनूर्मेयुलषुः सन्निर्गध्यनिध्यमाङ्कूयपुनूसउ लं कानययत् ॥

लस८साव ना ॥ ननष्ठमिर्थीन यावनूयभवतीनिसीं ॥ सार्थ वार्मि कसभजा

लानिषि र्कू जनवन्नूमि यषि वजयमसव कजूर्यववांा यथि कू म्न कूंव कूसूष

शुभूः का वं ग्रनिभिसा प्रवव भ सीर्म कू ॥ सूया नी ॥ त्रिकायाभिसा न ॥ र्यव यधु

॥ यज्ञा ॥ सं ब्रुनध्यसगानूलव वा ॥ ॥ लं का वभूजा स घ स भूत स्नू व ण स स य दू ॥ कनयभि

स्वर्गं ॥ तां यजन क्रत्वं ॥ कृष्णाकेशी श्रीः ॥ ॥ गणाकेलसम्पूर्णं कार्यसिद्धा ॥ मलकृत्व बन्धकाः
स्वकानाद श्रीकृष्ण क्षीरभार्ग क्षमाता ॥ ॥ भूगोला मूलीवदमाए ॥ ॥
गनभूमि श्वारिं हवतिलकं कः ॥ ॥ ॐ कजा श्रीस्वं कुशोभिदं ॥ ॥ लां व
ग रवनभमानयन्तं ॥ ॥ हंसि मन्त्रश्रव ज्ञाश्रयदं ॥ ॥ ओं सात्वबां श्रीनद्धं ॥ १५
हंसि सत्नुसि छमृत्व पथज्ञा मयथ ॥ ॥ कहीलपू अस्त्रजं ध्वकद्यशिर्णः
सर्वकर्मिकजन्मतृशिरं हस्तपूर्णिनस्त्रकज सूक्ष्मिय सवक्रो न्यकृतर्य सूर्यवज्ञायनिः

हूं क्रं ह्रं प्रकाल्म्हा८ हुं ऐं कामननम्भित्रसाखनगश्री नं हूं ॥ ह्रूं मद्वार्य्यमण्डलपूर्व्वमागह्माविः
दं क्रम्मी नकीभ्याय ष्टकीर्ण मण्डल स्वविभायय हूं हूं ॥ ॥ क ह्रीं श ४ सू ल्म ना ष्ठि प
मि ॥ ॥ नलवक ह्वीं ॥ स्मल्म दं मता हृ स्वाहा ॥ मूर्त्ति क श्री हूं ह्ला ॥ ओं सर्व्वयाग
चिरल्मह्लदसि ॥ मननभाविदः ष्वा ॥ ॥ ओं ह्रूं नलसमयश्रीं श्व सिडिजय
थास्र स्वाहा ॥ ॥ ह्रदि ल्मं ओं हूं ल्मा ॥ खियवं सर्व्वगाथेगगनाधिष्ठितारविध्य
सिद्धिवस्वयर्वसर्व्वलथागयमनसमन्द्रस्वमण्डलप्रविष्ठायवकर्थनलनल्मग्रज्ञव्वेलेलि ॥

ॐ रक्तआज्ञाहूं ॥ हूँ तिथ्य० ना कृष्णा ॥ ॐ आंप्ररवीटू ह्रीं ॥ हूंखसनसयमोतिकाय्यकन्दीग्रवः
ष्यमहसह्लासुनसद्रु ह्रूआयसूत्क्षा सन्नजसला य्र्मित्रच्छमी ॥ हूंतिथ्य० नयुद्धाक्षिण्यः
५ स्वर्ण कृमौंः अलिंमुलसयप्रुद्धेषा अक्किलाय क्षप्रभामकानयनु ॥ ॥ श्रीमनुसि ५
ॐ ॥ ॥ मध्या ॥ ॐ संसर्ब्वेनगगन ऊआयक्षोनाया स्नानीक्षिर्यानयासि तर्क्वेन थागणावे
ज्ञस्वातिहुर्मा ॥ १ ॥ पूर्व्व ॥ ॥ ॐ संसर्ब्वेनथगगन ऊआयस्नानापास्नानोतिर्य्या
नामिसर्ब्वेन थागणवेश्चावनासितिष्ठर्मा ॥ २ ॥ दक्षिणा ॥ ॐ संसर्ब्वेनथामपूर्ण आयस्वानापाकाः

स्तीर्थे न यामि सर्व्वेन भगवज्ज स्नाति थि [illegible] मी॥ २ ॥ पत्रि मां सर्व्वेन भगपूजाय:
स्नानानां स्थानीनि यो न यामि स र्व्वेन भगवान सर्व्वत्र [illegible] यमी॥ ४ ॥ उ [illegible]
जैस्त र्व्वेन भगपूजाय स्नानाया: स्नानानि यो न यामि सर्व्वेन भगवान्न रुक [illegible]
[illegible] स्मी॥ ७ ॥ पूज्य पूर्व्वेजा वां [illegible] य स्नानाया स्नानानि योन:
यामि सर्व्वेन नयामि [illegible] पर्व्वमा स्नानानि यो न यामि॥ [illegible] ॥
[illegible] सर्व्वेन भगवान [illegible]

वेंग क्ष गस्ति ढि वयि प्रा प्स्य ति कि सू णा व्यास्ति ढि ४ स व ल यं द म ठ्ठ्ह स ठु ल यू व णा व क्ष ध्यें ना
न स स ष्या प्य थि नि ॥ ॥ नि: वस्ति वर्ज धृ त्वा व र्णु वा द यी ॥ जुर्य भ स स या व
८ ॐ हृ ह्रीं वीं स्त्र व य धा दि त्वा ति मी क स्य वि ह्रू या कूं ति श्र व यि त्वा ॥ ॥ क्षि: १७
व र्जी धृ त्वा ॥ व ज स त्व ८ स्त यं न: १ य ह्र द य स म व ह्नि न्ता ॥ ति र्ह च न क्र णं या प्राद्य दि
हु या हुं मी न या स्ति त्वा ह्ना या ॥ ॥ वी ज का त्व णा य वि ह्लि ज स स न्ता नीं गु ष्ठ ग ती
णं यं वा कृ णं कु ण य कृ स्व द प्रा हृ ॥ जं व जा मृ तो द क ७० हुं ॥ हुं ति स फ ड ण ॥ ॐ ह क न ा म

ॐ नाथि मेस थानि क्रमादस्त्रासमयसंव क्रमशिजिथिवयजा मूलादक म ॥ लुमिय ८ नाथ
यानं काग्रथिला ॥ ॥मुग्रह तिनवादवजयाणिर्थदरुक कुयाधिसंकुन्दः
॥गनल्हया कर्त्रेसंनव लयाहस वसक थामानविथमायविदाव भकासक्रि
थीकुलानवकयनतं स्याभिगिन दत ॥ लुमिसमयादकदानविधि ॥ ॥नद
न्हावे भला वना ॥ नकाःह्मि वबि लोवेके सल थागं सुहर मासं थ्यासटि तिस्फून
नान कनं आःकावजामिनाहत्नूपं तिथ्याग्रसंथंगथागनावाधिनिःस्व मीवजस त्वा सज्ञाव

८ हिमि बाउयिलान खुदजिलंञान ब्जीक बछुऽकाणपीनघ ध्रीमणु लम्हर्ष्यनीलनुं कानीमि
नसिवंल नगु क्रुवर्छुलकलमीका बानूणमगु लवडगु क्रुठंकानं कज्ञूयंकानकं
बलत्वमाकाष पंकमन्वाहनीला तिम्ह मगुलाबगुतक क्म्याःऽकानंक्रितान्या॥ स्वर
धीजवक्षिमिशि श्वि रुकाम बारवब ज्ञानानीय यथाक्रमं नन्हलालाव घूकुंदम्याःऽकाः १८
वंखकर्हो बायायाबयोछेनधकाम यूमगु लाक्षीपिनं त्रंयविशननबस्प कानुनत्रिका
पहवाकिनथानलमछु जनकाजेका बस्याविपमानंमिर्पीजेऽकान नक्षिसमकु दुँऽयाम्हः

ॐ आवनयस्कान तय न नन त्र वा नये २ कृ हतृ श्रासो ॥ २

शुभिनयविश्रेष्ठं का साधिवन्निशिरिश्वाभूर्यमालिसमकृमणीवं श्वायाहु ॥ वृत्साञ्जीयपूनश्रुहूवं ः
यश्रीवादयभ्रागीतनमहूं ॥ ल सहृदिवकृमिवन्निर्यञ्जा ॥ क्षोज्ञावर्गकृदय
ववव नस्कां लेमं रहृं दक्ष भ्रा क्ष अक्ष ॥ ॥ क्लिनाय ० नभदश्चामावर्क्ष्य श्चे नयवमावश
यह्नू ॥ ॥ श्रूयवासमवबूषा शुकृक्षमियीसम्वनालानंरुदिकूलाश्रहिनीवास
यभवादयनु ॥ ओनिष्ठमहाक्रांश्च वभयकृशीहृदूकायविक्षृहविद्यानाजायमीमह
लाह्ना ॥ ल्हुनिसकुबसाद यंद ० नसयकवशभूमयल्लायथानिल्लाहू नमत्यजनिनाद्याजस्याय ः

वा २

पिवजमयमयमतूंलइविलिमीनपक्षस्थविकवजंगडूयविय॰कार्वंगस्वायपिवेगाबर्नीक्षास्वात
नन्निवर्लियण॥त्रवमावक्षविग्रः मानगियस्वाविकवजबीजवन्भिहिर्वोग्यवजबीः
८ जात्मावंसंतायमानीजिकायाः वेरनकंसूत्रकानेवड़कोसामालाकूसंक्षाला
बुद्धिवजागिक्रुयाहा॥त्रवमसी गुरमगुर्लवालस्यपवस्यवाहत्पंसर्ववदन॥ १७
नदन्ववगीर्हुदेवगीहृजन्मि हिनाकृष्यलक्षीजइनक्षावयन॥ ।॥
भियस्यस्त्रिवजंधृत्वा॥कृणाबसर्वसत्वार्थसिद्धियलाययानूगा॥गरुइंवृद्धेविषपयू

न बा ग म ना य हूँ हक्ष्म्ल्र्यां सेः स दू गि वि स र्ज य क्षि भा॥ ह्रं ष्या व ल विधि॥ ॥न मा म हु लाहि
स र्वी गि र्थी व ङ्क प क्र की ह ण्णाह्रवः ला स ह्रूं गि रु क्ला॥ म दू क्रौं स्मि न यी न व क्रा ह्र क्लः
व ला सें र्थ क्ष क्रा मां॥ श्रा क्लि य ग्छि व श्या हि वा न ति झि स क्षमा नँ त्यक्षा ब्ला॥ त्र व मं छुछ
द्र य स प ज द क्लि ण क त्र ण गृ ह्ली ब्ला व ज य द न्ह स म हि न य न्॥ ॥ओं ख ञ्ज ओ श्री
हूं ह्रूं ह्रः॥ ह्रू मि त्रि य० स्य द क्लि ण त्र र्य का व यि ल्ला स त्या धि ष्ठा न वि धि क र्या न्॥ ॥
ह्रूं स्य र्थ स हु र्ल सँ स्य फ्र या मि य त्र व गि न४॥ प्र था यू ष्प क था वा ह्र द व मा नी क ल क्र मा न्॥ या

इतिश्रीचिर्दृबदसत्याग्रयविलिंस्वलाकेजापाठक्रूस्थनूलावंश्च॥गाउगव्याक्रुनगुसा॥छ्नतिसा
श्वपठनिषद्गुसमअविंधि॥ । ननठसर्वंगदीलसासायाश्रींकावसत्रिनायाश्च
४ शानलद्भूस्थमकसाक्रूस्थमन्त्वा वपूदःद्धयात्॥लन्वतुर्लसन्तसायुवंश्वरतगवः १०
त्रि॰वस्थिपृथ्यमासूपन्वन्द्रैपूर्थैः तिक्रियत्॥ ॥अंदिष्टब्जैजःहृशमसवतसस्थ
शानसञ्जदयमःञ्चिच्छिनैसर्वं क्षिञ्चिमयुपठ्कूंह्हदृहसाठज्याठस्वैवीवकूंउ
तिर्व॰कूसाजैश्शिनाथकुग॥कूंजिष्ठठनूसवर्कूपूर्थीनिक्रियत्॥ ॥जिवसूकीसवा
गं २

पृथ्वीय मागिम स्न मृजा सिद्धि साव नमूस्व वाम ड्रसिद्धि ठक माग्ग ड्क मासिद्धि म श्च मीग
म ध्य मासिद्धि मम्द्भ्या वाला ल्वध्रः मासिद्धि द्वि स्वा गिड्र ना वा मृत मीय क्तिः
प्रसिद्धि दव मा ली तु सक्रियैः ह्लाज्ञ वा स्वाधिद्वि श्र मा ह्या नव्या द्व धार्द्द न मया
नवक न यधिय नमि ग मा य ध्या नर्म मृर्ष्वग क्ली न या नव मि स म ल्लहर य वि
पि सिद्धि मीव नखाव्व द्वि या म पृत क्रिय द्या न प्र यी या वद्या न प्र व व द्धिया न क्र
प्रसिद्धि वा क्र न र्ङ लश न्वा स वा क्र म जा न सी व द्वि स्व ना द्धि सिद्धि म ल्ली वा य स द र्म गु

मकृजादिवोवाक्षनामायाअप्रक्षावाकयसपुवमवीयकसान्वयर्ठनगठक॥नलकसूर्यीठवी
न्वानालायान्नावञ्चनीमाली॥सांघ्र जिगठकत्रभिर्नमलमलावलतिप०नुमिष्पसन्तु
८ मिद्यसिवन्नीयाहू॥ञ्छमिमालारि षक॥ ॥नदनूठक्षडमिष्यस्याप्रियमिसवा २१
टवर्द्दवतक्रयमकालर्गाछर्यंबिः कान्या॥वजसवर्षरयैनस्यवकृघाटननव्यर्ष
उघ्नाटमिदेनर्ष्काबजबकूबः नकूषी॥ऊँह्वमबहूष्वकृंजूषलासा॥ञ्छमिप०ब
ध्वयटसयनर्यहू॥ ॥हवजैयभ्यपूह्वाव्ववलानालामकथनपूतेकैमचुलानियविमा

व्रयसर्वदर्पमित्वापूर्णादिदिश्यंसूक्ष्मदक्षिणांदापयत ॥ ॥ ॐ ह्रदकल्पसुर्द्दपश्चमृजापवता
नमःसूर्यानीन्द्र कवद्र कालजातान डामकेनबधिंडिन ॥ संयज्ञासर्वसिद्धीनी समयास्म
हानिस्थिताव जयमात्र सलिलीमन्त्र स्वाहायनीकनुः ॥ ॐ लिपाठिला ॥ ॥ ॐ विजमन्तुः
लमहामन्तुस्वप्नविश्वाहा ॥ थागन गुलमहामन्तु स्वर्लिनांद्वी ॥ गुरुमन्तु लमहामन्तुः
हं श्रीक्लिमहाह्रीं ॥ ह्रां ह्रीं ह्रः ॐ ह्रीं या०यनु ॥ ॐ सिलिनिष्यदर्शना ॥ सकयन्त्रमदिविस्मि
॥ ॥ मादकूदलाहिषकर्णार्थ गुवनदक्षिणाव स्वाहा ॥ खक्षिकायदिस्क कर्यठासनर्ह गुरुसः

श्रु ती का त्र रिता ॥ ॥ बोधि त्रजय सू ज्ञानी स दलो सदा म हृ स म ना पि शा प ना र्थी य त्व व

ज्ञा धी द वा हि म ॥ हृ गि ४० ज्ञा या ः र्थ ॥ प लो व ना ॥ त ना त्र ज स्ता शि वि ता ह्

८ द ल क म स्व पवि श्व ऊ ह र्य ऊ या ः वि ध्य मि र्थी स प त्नी वं व ऊ ध व र्यं वि ना या ॥ ना ६२

पा ति त्रि का या श्चि ता ना ॥ सा दा ः मि ल श्री ॥ ॥ न द व सु ख ह धी ज म य व त्र नी गा

श्रि ज व र्हि त्व था त ना न्वि या द वि च सं य क्ष ति स्था हि ध का र्थी ॥ द्वि ज्ञा ना म ति स कं ऊ

ज ग त्रा णा य व ऊ ॥ ऊ णा क्ष न्या यु था द ल स था दे ध म स्य दि ॥ स्मि ति म थ स्या ज्ञा थे शा त ॥ सि स था

गनेः पुह्ल ह्माय् पनें मदा याग्गण्ड वीह्न्या। वेंबानन छान भा क्रीन्विं मक्वमार्गे ञ्वति र्गन्सह्
गड़ वजनें। ग्रम्नमुस्व लग्रवमिनं ह्र ... गिंधं मटि जिन्ह्य ना नकर्नं ह्रुं वजजानस्व पुह्ल
श्रीएदूपंहानम लाहिक्मसिः ... पिंथा। पूनई जमू आदि मूर्हि हि४ पमानिंमह
ह्यनगण्मापूर्यहिनिर्देस्वावनादि ... द्विज्यासदि भैस्कुम्र धम्नयटकानम्थ वाद्देनयो
गनःस्पपूष्णवं कूमादिष्ट्रीक्षिहि३ म ... यकिसःनयावर्ति दनाचिविल्लस्नगमूर्तिमः
फलर्नें कैनिर्थपमानिःस्ह नसाहिः पिंव्यसानं नूयवजानिदवीशिशमिर्थ ३ वंस्हाटिकासं

कार्शीन्निर्म्मेसंख्यात्वा ॥ ॥ मिथ्यायामिनस्विकत्वर्शे धृत्वा ॥ ॥ यन्नीगतीसकलस

त्वेकदिस्थितनत्यामसर्वोत्मकस्यव  वधर्म्मकृत्स्नावियस्यानि ४ भवदायनदितय

८ मदात्मत्वस्यानात्ममफसीनवृत्तं  पत्रमाहिर्षका ॥ लक्ष्मीधव ४ काकृत्नपर्व्वनाराः २२

क्त्रिनाकनोऽस्मिमन्त्युद्दीशश ४ नथी  विवृचामृजत्रनमच्छ्नमफतेनतवठभाक्षिकः

वकवाया ॥ ननायधिस ४ प्रवलः  स्म्य ४ र्वानास्तिस्राकननदवपूक्ष्म ॥ अम्यालस ४

भाक्षिकतवप्रजानामन्नफलीतवठभाक्षिकवकवाय ४ ॥ सद्धर्म्मपुण्डरीकसूत्रमफलाय ४ सं

धानृदवासूबद्गिशीयशयस्त्रीतिवास४युबयागभानीमम्वगईरखभाक्रिकवीतबाय।

॥ह्निगाथयानकलभाबकल्ला

कैरदथाप्नू॥ ॥गृढनूशियख्याशितसिय

ष्रतीजर्नंधृत्नाशियास्यथनदर्कं

दष्राप्नू॥ ॥मनाहृंजंकंकावाम्निस्थितर्गविजं

गज्ञागाश्रात्यंबहछीजबर्भ्यो

नीगह्रैनसखंकीरुर्गंहक्लातंयूका॥नल्लाक्षिग

गनसवाक्नगहीनबाधिविला

मृगमूपभसयह्नबबजींगुशिलशिनबगखमा

बबङ्गी॥ओंमदासूरनबजसत्वारियधभत्वासरिशिपिंयाभिसर्वंगथागजाध्विपलबाहदावेत॥

॥ अरिपर्कं सदानऊँ नेक्ष्ठ कनमक्क नीं॥ ध्दामि सर्ळ वृचा नीग्रिठ जासय सम्रु वींजा क्र॥ ६

वजादका रिपि ग्रहं तृंगे वे स्वमः दमिगिय ० नाहिपि॥ श्रुतृ॥ ज्ञाद र्गेहा ना॥ गा॥ स्रव

द रा वा॥ न्हूलूद का रिष का॥ ॥ ॥ प्रिला ध्ल वा क्ष नींदृ ८ सर्ळ सल्वा र्भका धर्का॥ ददि २४

म कबू णा॥ ब्रा कवजमक्र तुभा॥ ग्रः र्दं॥ न्हूत्य नत तृ न ध्वेषिनव गंम ॥ हाव

ना॥ ज्ञा का ऊंकंव लसक्कव वृषि र्गेहा नसक्वं नेकी हूर्न नरा कृलथ्या न ल्द वीरि

६ क्रम्हैव रिपिचामार्नं वृषव जा॥ हिः रिवृय नीयमा वें मर्कलगीपि कें राव येतृ॥ ॥ ना तृ क

७

तकवज्राङ्गि प्रटिर्ने वल्लसीरुवर्जीमपूर्ठमद्व्ला वर्ठं सावमसलज्द्रथं यक्ष्मथागनेर्स्मं अलिः

गमिषवर्त्रुरमेवषिषिर्निमरस्थः ॥ षिर्नसि मध्यसत्लाट समासाय्य॥ ॥ऊं वज

श्रद्धीऽवज्रिजूहिलिषि वज्रं॥ मध्ये॥ ॥ऊं सत्ववज्रीऽहिलिषि वज्रं॥ पूर्वे॥ ॥ऊं वः

लवज्रिजूहिलिषि वज्रा॥ दक्षिणे॥ ॥ऊं धर्मवज्रिजूहिलिषि वज्रीश॥ पश्चिमे॥ ।

॥ऊं कर्मवज्रिजूहिलिषि वज्रां॥ उ त्तरे॥ ॥ऊं मियपवनूमिवषिसमासायथ

तू॥ न्हूदकालहेवूजानीऐश्वाउयानमस्हलीयूसाकीपूजनार्थायमकृटपंचकूलादर्द

श्री:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

खगाङु २

सिमा हृतूंअंह्मन सस्वाविन्वंसियँवर्ज वास्विनाना सकँविविस्यां॥अहिषर्दं सलावृजं ४

स्यादि॥ ॥अस्याहिषि कह्ल सहिवृ छे र्वजना माहिष कमाश॥हृद कसर्व्रव

ह्लीशृङ्ख वंजीसूलि हयस॥ङ्हूति यवनसिध्य स्यप्र कष्ठ सिमाँतिष्ठ स्वायदक्लि ण

हक्लुदयात्॥ ॥ग्रेक्वनकण ह्मनसिमाखव्लावँस मूलाहृसर्त्यक्लान

स्वरानँ॥ङ्हूसि वजाहिषकश॥ ॥तादकूनथाध्यसितवकँ॥ थ्रहायाव सिमाकूपँ

यम्हृ शकँद स्वमायनक्षापकनस र्वस्याग्यस्याम दनहूँ॥ ॥स्यवना॥ ब्वँ स्वक्लाहृ

याहा ६

मा य शि द्धि नृ यं ह न स वा ति नं घ प्य क्ष ना य शि द्धि द नि श नाि त्वि ता व य दू ॥ ज्ञ रि ष क ण्या दि ॥

६ ॥ ॐ व ज्ञा वि य ति ला य शि षि [illegible] मि ति क्ष व ज स म ह्लं स्वा ॥ ॐ व ज्ञ य प्य क्ष सू भ्य श ॥ २७

स्ही ना शि न या र ग द्व न्म यि स्त [illegible] त्रि द्धि ना व ॥ ॐ शि य ० नृ सू र्व द्धं ना म ह स्त द मा ॥

नृ ॥ ॥ क्ष ना न ष्टा ह्ला नं ज भा [illegible] म शि द्धि स्व ला वं श्रू न्य ला क नृ भा रि सं ॥ ॐ शि ह्र

न शि य कश ॥ ॥ ॐ क्ष च श ॥ वा षि व ज ह्ला यो दि ॥ ॥ ह्ला न ना ॥ ॐ व ज्ञ ॐ वे

शा क्ष म नू यं ह्ला न स व्वे न ल र्णे वि ता व्य ॥ ॥ मि स शि व ज प्र क्ष्म य न मा क्षा व य ता ॥ ज्ञ रि ष क म

हा वज्र यो धि॥ ८ ॥ओ वज्र सत्वो नेमा शि थि वसं मि वज्र ना मा शि थ कल थ॥ पद्म सू कं

ना म्ह न धा ग म तु र्श वज्र स्व॥ हूं स्यो ............ थि नी धृ ष्य पा सू सूप न ह ष्पा दनी॥ ए।

| [illegible] स्य | [illegible] स्य |
| --- | --- |
| ममसावज्र | हासवज्र |
| अनुपमवज्र | विलासवज्र |
| हृ[illegible]नवज्र | बाणवज्र |
| समन्तवज्र | हीरावज्र |
| विजयवज्र | लास्यवज्र |
| ज्वलनवज्र | [illegible]वज्र |
| सत्ववज्र | [illegible]वज्र |
| महासत्ववज्र | हयग्रीववज्र |

म.

| वैरोचनस्य | रत्नसम्भवस्य | अमितारस्य | अमोघसिद्धेः |
| --- | --- | --- | --- |
| जंकारवज्र | रत्नवज्र | आगवज्र | सुमासवज्र |
| [illegible]नवज्र | विकासमणिवज्र | अवलोकितवज्र | [illegible]वज्र |
| गगनवज्र | [illegible]वज्र | धर्मवज्र | हूमायवज्र |
| मायावज्र | नागवज्र | मञ्जुवज्र | [illegible]वज्र |
| बुद्धवज्र | गजवज्र | पद्मीकुलवज्र | [illegible]वज्र |
| सूर्यवज्र | [illegible]वज्र | पद्मीकुलवज्र | [illegible]वज्र |
| कायवज्र | [illegible]वज्र | [illegible]कुलवज्र | सर्ववज्र |
|  | मानवज्र | करुणीपद्मवज्र | [illegible]वज्र |

| | |
|---|---|
| सूक्ष्मवज्र | त्रिदिववज्र |
| शीलवज्र | क्रकायवज्र |
| सहजवज्र | अग्राध्यवज्र |
| वज्रसत्वश्री | अग्राध्यक्षश्री |
| वज्रवर्म | वज्रभैनास्या |
| वज्रविलासिनि | वज्रहस्ता |
| वज्रसत्वा | वज्रगावञ्ची |
| वज्रकाकिना | वज्रकला |
| वज्रवीना | वज्रसामकी |
| वज्रपताका | घघनानि |
| वज्रमाला | |
| वज्रादया | |

४

| | | | |
|---|---|---|---|
| वैरोचनश्री | वज्रसत्त्वश्री | अमिताभश्री | अमोघसिद्धिश्री |
| वज्रडाकिनी | वज्रहासा | वज्रनागम | वज्रगार्हा |
| वज्रगौरी | वज्रधारा | वज्रगीता | वज्रमाधा |
| वज्रहास्या | वज्रज्वाला | वज्रानाहस्या | वज्रकवी |
| वज्रलावना | वज्रसारा | वज्रवत्ताली | वज्रमाला |
| माहवनि | वज्रकाशा | वज्रमनी | वज्रनईश्वरी |
| | आकाशनवि | वज्रहास्या | वज्रयक्षा |
| | | वज्रपाशा | वज्रनि |
| | | यामवनि | |

२१

॥ सुविशुद्धधर्म्मधातुस्वभावे वाचनस्वभावी यक्ष्यस्तनविशुद्धचाक्षीय क्षस्वकापिकासूक्ष्मतोवि
वियायगमार्ही ब्रह्मनानिरूपण क्षमाक्षान्ह्रीभिनासारिवक ८॥ तु ॥ श्रीमा:
सादक्षम कुठवज पञ्च नामावज रिवकाउच्यमावे तिवारिवकौ ३ सिकां ६ भिष्प्राप्ति
याखार्थमक्तु या ७ ग्रवनयार्खात् नमकुमकुसाधनमघविकुधारनामि॥ ॥ न
महीनिर्थीद्कजदुक्रिशक्तनोडर सिंावैशायायोरिवकौरगमक्षींदहिक्यानिधि।
स्वयनार्थं ८ सम र्थस्मीयनाहंस्वप्रसादमक्ष॥ हं भिपठितचा॥ ॥ सावना॥ तुर्थेष्ठसर्णं

कनवर्णं व ॐ हूँ वज्रसत्त्वरूपं ध्यात्वा निर्यातं सर्वात्मकाय ह्लिवितु ग त्र यना कालें
हृदं पूर्वस्थाय सितसासनहुं वि विग्रासपदलकामसलापाविवज्रसत्त्वरूपणार्द
ध्याः ॥ ज्ञानस्यमकूठं ॥ ॥ नमो हूँ कामर्ज ॐ वज वज्रसत्त्वरूपं ध्या ध्यौ ज्ञिनादि २८
द सिधवनःसत्त्वावज्रसत्त्वामसाय गभसममकरतु सर्वात्मावज्रगर्भायविशिष्टपाविशम
यव यस्सत्त्वा रागवानु ॥ हूँ भियुं० नूम त्वं वन अहृदयमु ॥ हूँ निवज्रसमयश्च ॥ ।
॥ नमोधर्मश्री आकाशनऊँ ध्यात्वा ॥ हूँ पीतासर्व बुद्धानां घण्ट ध्यासा नूगम त्वं या पि दि त

दाक्षार्थ्या काङ्क्षितवज्राग्नि नेर्म्मला॥ ॐ स्थितये नमः स्वनग्राह्यताम्॥ ॥ॐ वज्रपाणिनि सर्व्वस्वभ
गतस्वद्रव्यक्षणनाभिद्रावणमय्य गणाधिरि ज्वालाय समनिय भ समयपालि:
लावधुर्यादिमलः स्वलालोर्वि: रवीकृतगर्वलावशुचै सत्संत्वङ्क्षियननहन
भाहवृष॥ स्थितये नमः घ भवा दयवा॥ ज्ञानिगताहिनयंकायवयतु॥ ॥मु
जादिहसमयप्रज्ञाकामनास्वर्द्धि: हरखगर्भ सर्व्व स्मृद्धि ह यनागतसमुद्रायप्रकीर्त्ति:
नाहिलनमुद्रासिद्धिस्थाय सर्व्वकामायतनगतगर्भ सर्व्वाभिषिञ्चसाधयति प्रतिपाद्यवनजस्व:

॥१४॥१३२ २१

ल ष्ठ र्हि ॥ मि त्रि स्त म य म्रा न बि भि नि ॥ ॥ बु मा स स र्व द या स्‌ ॥ ग ह दं ब मा य प ठे ॥ ॥

थे जं थ्र ब्र ज तें या क्ष व ध्व अ थ म्मे ल क्ष्म ष्ठ व ॥ स्त स पृ न म ला स्ट्र जा म भि ज्ञा य ष्ठ स्वा ज य ष्ट्र

॥ ॥ ला ब वा ॥ ल ह ध्री ज वि ति र्ग न द व त्रा ष्ट्र दे वा क्रा ग ह्रिं व रि रि र्थि या भ्रा नी वि ः २९

५ दि स्वा ॥ र्ग न्वा ॥ कं वा ॥ मी रि र्थि थ ष्ट्र ॥ श्चा वि ष्ट स स्वा क्ष जे प्रे आ ष्टु क ब स ष्ठु गी द द्वा ति ः

दे र्थ ष्टु ॥ मी ॥ त्रि उ क्षाः स मं ह वी ॥ ॥ अं स ड्ल ध्य ग न्ना रि ष दा त म त्रि य ष्ठें ॥ ॥ ति

ला म नि स ष्ठ ॥ अं त्र ष्ठ नि ष्ठि न व ज स्ला ष्टा प्र ष्टु शि य ८ ॥ यू पं लां पं ष्टु ग ॥ ज ख्र सा ष्ठीं ष्ट्रा नि

ष्यी कुल मार्गि गप्रसन्नावे श्रोत श्रीद्विप्रीः । घ अदज सन्माया ग्रस्धा त्रार्थ सद्व नेसमी ॥ सगुर्व
धर्मालिप कर्म नामगुरु सूलमी । … कूटा गतवलिपि लिहा नेविक कूट ससूक्ष्म ॥ देव
नानत्व सं [illegible] कन्द ना ॥ यं वक्ष … अ४ ससा हनय वर सू चा४ प्रकारिया ४ ॥ [illegible] देव
हृमी कि प ज्ञायव नामाद्रि प का ॥ … ॥ स्तु श्रुपमा ॥ मेजुसर्वं यनेहा नीदर्दि मसिद्धि:
दायक नङ्गिपठ न ध्यवण्णा ॥ … ॥ जतं खर्यी मा क्षमन्तज्ञ यश्रिजश्री वान्न दया दि कम
श्री ॥ द ना४ स्मिमया रूगव नास्मि श्री ॥ विद्दि ना ल वा ॥ ल्हुमि वद नामि ब्याल सूल ॥ ॥ मिथ्या

रयि ष्ट्री माइंद्रि मथा लगवन्मयिस त्रिद्धिमाल नह्रीं ॥ ॐ ह्रीं यत नगुह्री लाजयनू ॥ ॥ ह्रि

ध्यह्म दलये स्यापिसिद्धि वीजा ध्या ना यपन मार्थन कोटिच्छि क्र त्रगु च्छयनू ॥ ॐ ह्रीं

सकृत्युध्यानविधि ॥ ॥ नमठ सवर्ण्ण वजन मा ॐ नन्य क्लनघगसध ॐ वनः ३०

५ ठमसहाकया ॥ ॥ मिखस वकृया४ याकानी याला ॥ ॐ वजसत्रा महनयः

देहड्री ॥ ॐ ह्रीं य० न ॐ यन ॥ ॥ ॐ ह्रीं लानी यटसीव लज्य नीनजिनै क्तबाशलाक

थेघबा ॐ नयथाला काहानै ॐ मिनी ॥ ॐ ह्रानयटसायनयनायाद ख्यवकृनरिषलाहये ॥

श्री

हूं स्वां ह्रनां विघ्निशा॥ ॥नमाय स्वेण सामाय स्वाहा॥ कायभसक्तिनीन स्वेयमूर्तिनी॥ त्रिलिनिम्ब
सम्राथ स्वांहुं हुं हुं ज्वालानाविला ॥ हुं स्वां ज्वालानाविला॥ श्वहुं हुं करालमद्
व॥ स्व स्वेणं वहज सत्वं सत्वं सत्वं ॥ हुं ज्वालानाविल॥ महादिनि श्वेभीव सत्तसर्वद
ज्ञाविश्व स्वयं॥ त्रिदैह्ना स्वाहुं वं ॥ धर्मांनि स्वराबावानानायाना॥ कहूम स्वार्थम
गुलं जानाज्ञ स्वशिनायिनी॥ हूं ॥ लिद स्वंहारिप्रकश॥ ॥नमाहाष्ठकानडं
यन्त्र हा विलिप० नूदत्वा॥ ॥ जं सर्वमनथानागानूनूरागय स्वा॥ हूं मिवदम्॥ सिया

इयि सर्व्वन थ्य गगा नु वा गयामि॥ ह्रिय० नादि ष्प्र ष्ठ ध नवू ज्या व ण्डुर्द्दि क्षम ला द्वठ ग वा०
गफ व्या एव्कतुर्व मध्धायर्व॥ ॥डकं वा णृ ह्रा यनूस मा स्व्या नाड या पा ओ ष्णः
ना कु गठ ाल व कुस द जे० स्व्याः गा विडं वि कस्य ना ग नी॥ वतु स्मा व विज याः ३१
५ ह्रू क्रा न धर्म्म श्रतु न ज प्रानि वधु वीजा ध्म नाय भव क य०॥ ह्रू दिद्र नारि धे क्ष्याः
॥लाल ठ वा ञ्जु य द्वा द्वि लि र्द्धि डनी क ना॥ जि ष्याग्नुव म जु सं का व ग्नानि मुद क्षः
लि ष्य स्य व क्रापि सा ध्य पठ ड स्वा॥ ॥लि ष्या दिश्च न वजीव ना दि सम्यनी सम पि नी न दः

सायं स्वर्यां बा पुहं तु स्फारि य कार्थं गुब बलि र्याय कृना ॐ ह्लि गु मं वज सत्व समविमृष्या॥ श्रीमं

स्वा व कु सा द न प्रा मः स्फुरू ब क्रि याग स्मा कृ ष्यारि य क ण कृ यू ना थ ज न प्र हैं॥ ॐ

मि गम थ याश्च प व हा॥ ॥ ता ः म ना॥ गुरु वज्र श्रा दं का व वां स्फ या या कृ ना श्री

सूय क्षू न्य ना न क र्द ति याधि न द वी सू या या वज प म सं स्फा य प र्ष वीं स मा य दिं

कृ र्द न्ना॥ ॥ॐ सर्व त था गः मा सू या ग श व ज स्व रा वा स्व का दं॥ न न स्य हः

श्री ज न यू स्वा की न त्रा व ना दि स मा य न्न बे या व ना दि न था ग ना सं नि वे था य न ता म ष प्र वैः

ध्य महात्मा गणपतिर्वीर्य्याव धूत्वा निर्गत्य कृत्वा विधिवत्वा वज्रसत्त्वो महत् ॐ ह्रिः वीजयोक्तु सा

नामिकायां वज्रसत्त्वि प्रवीणः दशाङ्गुष्ठमनि तथा गणदेवं खनाधिविरचि

त्रसाधि विमधुना खजसूर्यं निष्प स्थवकृ॥ ॥गद्द्वालिप्य ४ स्थपि व्यासामो ३२

द पिनज्ञानुद्दिकृताञ्जलिर्गुप्य मद्यपचपत्॥ ॥दंश गव स्मृता सौक वजः

याण्यां नस्थव ४ मूजउ साधकौ रथ वज्रयागत स्तुह वीं॥ यथा सूर्य महात्मा नो

४ समाधि कृष्ण व्याधि लाहं सानर्पकर्ण घाना मङ्गल्य हंथा ऋण नमो सिमि ॥ कृष्मि प ० ॥

गुनूलन्ह त्याँवृ ङ्वयपूजाय थ्वलीदे ४ त्तिका वजध वा कि हिग । सिं वा निस्यां स्वथा न स्व वा त्रि वे
हेन न्ह्या वू स्या ॥ न्हू जि मगु ला थि पस कुं प ० नु या ग स ल्यें वा स्ती ॥ ॥ जूला म
का मुल्ह मि जि वद [illegible] पि वना त्र ला प्यू ल्हाय स्वा कु ल्ह मकाव ह्व जि नू ल्ह ला न न नि:
वे ला गृ नू ॥ न्हू जि गु का हि ग्र का लि खि श ॥ ॥ थी न स्ह ज स या नू रु । म ना ॥ २ ल्ह प ल प्वा
॥ सू स्व या न्ह भू मा द न ग्रा र्थं गु क मन्ह यँ जु ह्ला ह्ला वा हि ष का व का सू ना थ म न्ह गु
हा सं गू रु रं त्रि धि ची नीं का हि ष कं द व ल्ह स ॥ वि ह्या नं थ जे ने कल्ह म न जे हि श सि कृ य ॥ स

हां मृजामिमींद्र श्रिज्ञनूल्जन सूरवधर्यिनी। ज्ञादाय सर्व्वबुद्धानी कृभूयूजाम नुल्लनी॥ ।
॥ मूलां गुबुः ४ भिध्यायप्रह्लासम र्य्यप नुस्रा श्वयपटमयनयूम्॥ स्त्रय्यपट ८ कांकाय॥
॥ ह्रीं ऐसा क्षम शीन म्यीं सव्यावृ चा ४ युकाच्यिमाः ४ वक्रक्रमयुधांगर्नीसमाखादय ३२
ध सल्लरवी॥ कजयर्यके नक्षिक्तम स्वकार्गतसिकायनू॥ ६० तियुतिताय समर्य्यपुत्
॥ हायि ह्रींक माधि हि ४ मृगन्वी क्लतसन्तस्त नस मूर्ज दर्भयतीतिति ष्वी॥ ॥ पु
स्थाव दनृ॥ किंल्लमन्लहृ सवलाविकृत्रादिकह्कर्णी॥ तकश्रु कृतथमा संस्त्रीशींहकितथ

पत्री॥ पकवईसस हूणा विघासीहक्रियूक्कण॥४॥ वृंवनीत गयप्रस्थ क्रू हिवसयथातूखवलि

ति॥ ॥उयायावदरू॥ कि थ्रा हूंना॥ सूदद विशुक्रुनकादिराकणी। कार्यालेकि॥

सदास्त्रीभीवू पवीहगपस्रव॥ ॥प्रहापूनमादा॥ अहामधीयीपसंसर्वेसूखवसमवि

नी॥ यः॥ सवमितिविधानेनजस्याहम अनः॥ हिना॥ कृवूयपभेमथाकार्यीसंवूचावाधनादि

नी॥ त्वयंमहासूस्वानाआसूत्रैविदि सद्याहिनः॥ ॥रजमाकहा॥ ॥कृ निवयदरू॥ ॥

रावना॥ ता॥ पित्वयीसचनम्हार्हिप्रहीधीवजयाणि नीवृयानियाघा॥ जी॥ हूंजनिगकमलकृसि॥

र्यो॥१

गयाः किंगल्क मणोज्ञाभ्यांनतिभोवजवक्रपीनस्थूकाभींविराज्याः॥ वासवामोगनानाश्रीकृयः

वकृक्षी४कानयागकृ्याभिक्राथी    यभिक्रानपूर्व्वकैसंवाम्याः॥ ओंभीरद४स्वाहा॥ ओं

सर्व्वनथागगानृनागवजखलाः    वासकाहे॥ क्लीतिसक्रमावलियनत्तुवृयदभाय

द तिगानस्वरदः४स्वह्रधीजक्रिवभा    कदूनथागगायविष्ठितगवीमागुवुभवयुव ३४

भिगायभिभिनवैयावनलावना    दकवसीहतानाभिसवरम॥ ॥याववकृत

यातिबाथिर्हिविविसक्रंशी॥नावलुाम्यातिविक्किन्लीकिसयानवऊंतूखो॥पतिगवाधिक्विलत

सर्वसिद्धि निधानकाः मूर्द्धिन स्कन्धविह्मालकू नः सिद्धिवनिद्धिता॥ ॐस्वया जूजूयागनः॥
हहज्ञावन्द्वस्थीयह्मास्मलस्मृय गे॥ॐ सिद्धस्मास्मनारिषकः॥ ॐ ॥सेनवःवडु
र्थारिषका॥ॐ दानिंस्मनविसे घनार्थयस्थाकवि थिना गस्ही गैयुस्मास्मनारि
षकैसेवःवडु र्थारिषकेस्हस्स नमरिषकैवलीवक्रुर्वो॥ ॥नारिषकादि
यायागीयागीत्वमरिवास्कति। हँयनमूर्च्छिनाका ॰थियब्रह्मगहस्कुकी॥यइ
कौ॥ ॐ स्वनहाय नवाद्धि ॥ सविलंजुवःवाकया॥सिद्धिल्ह्मायगग्गागवाधिमत्वस्याधीमः॥

॥ पूर्व नाद्राऽपूर्ति थकीप्रि आरिन मस्मि क कूय्र कार्मि मीं प्रा वार्थ गु कपय्र ह्लाव यतुर्थ नाय्नल्था
॥ पूर्व थकं गु थूश॥ पिन सान ध्वरवं प्राक्रं नि र्वा नें थ्वधि वा ग ण भा स ख्य मा न्ह थ्व सात्र
गु सहज मा रिद्धि वर्जिन श॥ प्रनाः पिनि थ नं भ कं रा वा रा वा स्त कं बिड्डौं भ्द्व न्य वा
ध क थूं आरि नं वा धि विक मि नि ह्ल मी॥ ख सं व ग्र मिमि ह्ला नं वा क्वा थ्व मी नि ग वं २१
प्रधि स्था न प धं थ्र गा स र्व ह्र न गन्म पी॥ न रुं वा य गु नू क ह्र ॐ नरुं वृ गा ॐ
मी॥ ग स ह जा व ह्ल जू मि य न स का स्र क रा जयि की भ्ग॥ न स्वा ह्रीं न्य क्ष हुत्र मा मा थ्व सु द्धिः

विपाकश्रुत ३

थे४॥ ॥ॐ प्रथम सहस्रं जन्म सहस्रं अविनय भाष्य बृ च कसजा ना बृ च पूता श्रिसीपुनी
॥ ऌ गिवक्षु श्री हिं धक४॥ ८ ॥ नं वकवं म स्वा४प्र ज्ञा या४ या लिं भिष्य या श्रीदक्ष्मा
नह्वपं वाम कय धृस्वा सद्ध्गक वंभि ष्यभि वस्विदक्ष्मा॥ ॥ सा क्रि श्मायुयं मः
कुसमर्थिभयम स्मेमयाभि नथ्य गवा स्वा श्री कृय॥ ॥ सान्ध्यायाय म वृ कुली
गुर्ज्जवर्द्ध जगकु पीन स्वाद्वियाग सनासा मा क्लर्थि स्वं कदा व नशी ॐ दका सर्व वृची
नीविथाव्रनामनृकु वीश्रीगि ब्राह्मणि यामृ८४ स्त्रि द्विन स्यन वाकस्मा॥ ऌगि यदमृ यि थाव्रनं:

दृ गाद्दा॥ ॐ भिश्चियाभ्रुणदास्यानकिम्भि०॥ ॥ नादनुभिर्य्यंवज्रवंदूर्पविरलाया॥ ॐ दर्गोसर्वं॰
द्रुल्लें वज्रसत्वक्ष नाष्फिनीत्वया। यिद्दिसनाक्षर्य्यंवजापाणे हदंव्रगी॥ ॐ भिनिम्बदॄ॰
८ वज्रीस्फहस्र॥ ॥ ओं सर्वेन थागासिद्धिवज्रासयानिष्ठ दंषल्ली क्षयया सिवः ६९
ऊसत्वस्रीःदिद्दिद्दिद्दि हुं॥ ॐ भि यज्ञुगक्षीयाहुं॥ ह्रसावमक्षोंजोर्य्यमक्षुयासय
हुस्रीं हुक्रद्दिर्युद्दवामिवंस्ह्य गावज्रक्र्यमा॥ ॐ भिनिजद्रुनयानाविचिश॥ ॥
॥ नानुसहहाजवंः गीनवापाद्दहीनाद्रियथविविंद्रुलाक्षवंजमृयदजःश॥ ॥ ननाथर्गा

व मा॥ मि खाय्ये॥ द्ददस कमरं सरव मृजी मं ह्लय्य प्रयथी द्द ईस्यूर्ठव॥ ॥ला व ज्ञा॥ र्यी ढ या मि
नं ज्ञजवाया सी नूयी खर्यस म्ब व ब्रु पीविर्थि या॥ गम्भाल क्षिन्या क्ष वीज म यूस न्ना लीगाः
हानदे व मी ग्रुव ल्प॥ ज्ञायाबि॥ ॥गीग हलतासय भ॥ त गा मृज सा नु ना॥ व ढी मूर
स कण्ठी नूच कमरव सा रम्भमय य: द्र मी मूज्ञा या॥ मिनाहरन ह मी हव वे गा व ना शा घवि
चि नूया॥ नूमठिमि विर्थि रूप व्रह्म: नर खं न था वीमीय व भ्यू ज्ञा॥ वो दि पवि श गा॥ स्वज्ञा
दि मूज्ञाम्नू ज्ञा॥ योदि स्वरा वाजव दथि मृ ख्या॥ ज्ञा या॥ मि यू वं ली मं ह्लन: ज्ञायवहि॥ ॥ स्नु

५ थरूपशा॥नीलम्बरा॥ओं श्रीवज्रदहयू यू कहूं हूं हूं जाकिनीजालसम्बरं स्वाहा॥गिगि त्रिजं
फं॥हस्पा॥ ॥ओं २ सर्व्वबुद्ध जाकिनीयवज्रवर्णनीयवज्रवैरोचनीयहूं २
हूं २ स्वाहा॥गिगि त्रिजफं॥ध्या वज्रवर्म ॥ ॥ओं घ्ब२ घ्मा२ यय२ सर्द्द२ वज्रधूकहूं हूं २१
स्वाहा॥ओं वज्रवैरोचनीयहूं २ हूं स्वाहा॥गिगि त्रिजफं॥अभ्रितिभिनासि॥गुरुचक्र
मण्डावीतव वज्रोपूजा॥ख्यातमकं श्रीवज्रसत्वमूर्द्ध्र्यविहितपक्षासस्तिन्दि॥ १ ॥
॥ओं वज्रधर्म्मसमयस्थं हूं लुं रस्ताशालिकहूं हूं स्वाहा॥ओं जीध्दहहूं २ हूं॥हूं गिगि त्रिजफं॥

कुण्डलद्वयं कार्णे पा ४ ॥ गृह्ण दलसमावीन कुण्डलाभिमानाल्कं ॥ श्रीवज्रसत्व ४ ॥ २ ॥ ॐ वज्र
सूर्य्य जमाविश्व मय तमय ह्वीं नल धृ का हूं फट् स्वाहा ॥ ॐ रुक्म र्द्रवू क्षशाकि नीय हूं स्वा
द्धि ॥ त्रिजप्तं ॥ ॥ कण्ठिकां ग्रीः वायां ॥ गृह्ण दलसमावीन कण्ठिकानलं संरवा
स्मर्कं ॥ श्रीवज्रसत्वसमुद्रं पी ४ ॥ ॐ भा स्वगपत्र मभाश्वर एकं द्वि जिनजि पा हूं फट् स्वा
हा ॥ ॐ ह्र ४ न मद्धि स्वाहा हूं वा फट् हं हूं हूं हां ४ फट् २ हं ॥ त्रिजप्तं ॥ नूपुर का ह्रयं कन ः
या ॥ ॐ हूं ह्रीं ४ प्रह्लाद का हूं फट् स्वाहा ॥ ॐ वं ह्रां यां ज्ञीं भ्रों जं जीं हूं हूं फट् खां हां ॥ इति त्रिजप्तं ॥
गृह्ण दलसमावीन नूपुरकं भाश्वनाल्कं ॥ श्रीवज्रसत्व ४ ॥

मस्वल्पाऽश्मो ॥ स्फुजक्लमनावीवनखलामाग्रसिद्धामर्की ॥ श्रीवज्रसत्व ॥ ७ ॥ ॐश्रीव
लाद्रद्रस्रूम्रूकल्पादि ॥ ॐशित्रिजार्ध ॥ न्यूनख्रमास्त्रमग्रमामाखहक्नल ॥ सं कव
स्य्रअस्त्रह्रस्ला ॥ ॐशित्रिजर्धा ॥ मा प्रवामकथ ॥ ॥ॐ नमारगवगवीगवीव
मनायन्त्योद्धि ॥ ॐशित्रिजर्धामव हीँगजमनू ॥ स्फुदलमनावीवखद्वीगजमः
वृषाग्रर्की ॥ श्रीवज्रसत्व ॥ ॥ ॥ ह्रष्टिवागमकर्हृयनाकादिर्कीदमान् ॥ ।
ममाःसूलमजयनुप्युयमालामावावखलिनशिवह्रीसाह्मा ॥ पंलांपंक्रुग ॥ नजावसिव

ग्रा॥ नगरुपूथ्यमातामादायमिथ्यस्यमिनमिश्चश्राउयनु॥ यं लां घं रूनु॥ मग७आयया नना

हाद्रेगनु॥ गीनवज्ञाकृन्तुलामू वेसमग॥ गीनहूंकाथर्दीजग॥ पजन रूथै॥ ॥

॥ क्षसयादिन्वासियद्रउनी॥ यं सांद्रं १ रूगा॥ जनवलाघम्रग॥ खादनीकाननित्या॥

॥ ॥ नहस्कनैनिमसयम ॥ पूनछमलकेंयालिजछानू॥ ॥ गुगा२यीदि

छाछपूउनीक्षात्रायस्वालाकेंन्वी॥ ॥रूगा॥ मैलाअ॥ गीनस्वादशहय्या॥ ॥ नगा

मूजाहूजन॥ दाक्षिण्वा॥ स्कंगि॥ मनिविह्यका॥ वीविमूयवलु॥ हूजिवीयवर्थीत्रिथ्रि१॥ ॥

नगनक्ष्मगनगत्र्योंथीत्रनकष्टिं श्रीवासमूर्ष्टिंक्रदिनिक्षयदनिशनरयमूडर्यी॥ ॥

प्रभाद्दस्यांकवासिं श्रीवजन्तत्रक्र थगनगतवईर्गमिनाइस्सूयकारानमा॥

कयी॥ ४ ॥ह्जमंकवजनाम नथनगनस्तिद्यासमयर्त्वेरर्लुबंथ खं॥ह्ंमि ३२

४ य०नुथ्यांकूथांनू॥ ॥पूथ्यदा गनान्नूनूपनथागनत्रूर्मगिर्यो॥ यनं वंव्याः

क्रियनसत्र्वेनथागनें सँवाध्मेः व्यात्रियमन्हूमिग्रजागचें॥ ह्ंमिव्याकानणः

मिथि॥ ॥नदनक्रिजिनिकादानचीवनाथिकीदयानू॥ ॥ओत्रंजधर्म्यनखं॥ओंव

ज[illegible]तु सी॥ [illegible]ियध० नृ म श्य का आ॥ ॐ न ज रा म नं॥ आ॥ ७ का व ॐ न दवी॥ वा म॥ आदि स व ॐ य स

वी॥ आदि स्व वं य ० नृ॥ जस स्व व श्री [illegible] य श्री॥ [illegible] स्य स्व वं य ० नृ द स्वा मा य भी वा द य नृ॥

[illegible] का म [illegible] श्री स [illegible] सा का श्री वाः [illegible] य स [illegible] श्री॥ आ॥ का म स स मा या आ स स [illegible] य स म गा

[illegible] वी॥ [illegible] स [illegible] ज वि [illegible] [illegible] द सा [illegible] ध [illegible] स वी य व [illegible] या॥ जा [illegible] दि व

म का [illegible] श्री व स [illegible] वी॥ [illegible] मि अ द नृ॥ [illegible] ॥ एवं सामान्या नृ [illegible] द [illegible] वि

का [illegible] य थ [illegible] मी॥ मि [illegible] वे ना व व [illegible] य ध्या [illegible] य [illegible] ध्या ग य मि [illegible] नि द या नृ॥ ॥

।।सर्व्वसत्वहितार्थाय सर्व्वलोकसुसर्व्वगणाय यथाविनय गाथि श्रीधर्म्मचक्रंप्रवर्त्तय ।। बुद्धाया
यास्वरूपा लाविका सर्गितिव वात्र केशश्रुखित्र विगतासीगःमत्वार्थ कृतुसी
द दर्शा ।। स्तुतिवर्म्माभद्दस्लातवज वलपसकर्म्मवक्रागद्दव्रङ्कयाह्वींवआपाऽस्त ४०
हृस्लद्ध [illegible] त्ता ।। स्तवन्दिलावदत्ता ।। एवंकारिष्या ।। मियथाह्लायपविप्रस्तुता ।। स्तुत्यस्तु
सोविधिश्र ।। ।। नदनृधावय गुणिवासिद्धजंप्रदक्षिणीकानगता ।। गीमसुय
मिमसंत्रिता ।। ।। नगःरुत्रिदर्वज्ञा वार्य्यस्यासनयानयता ।। स्तुतिवदता ।। मिमूर्यं

निवदिर्गं नि स्थं मञु श्रीराविन्यमि मञु लग्ध न मस्थ र्थं नि स्थ स्यहक्रः मं वद ग्रोन्मू ना

मञु सा वा र्थी मञु कुध भार वा न्हाधू चार्नं। बाधि सत्वा नांद बना नांथ सम्म

म४भं सत्वा नामसनूकं पा र्थ विधि नामञु सं त्व या।सिरिविन र्व्यं प्र यत्न नमञु पाका

न्य सा ध र्वं ४।ह ध्रुप्र नि क्ष्मा यर्मे वं द स्याल मञु सीमर्ह पार्थे विं नि म् का रवाः

न थ्य व सू हि न ४।नि सू न भ्रु नीम राजि या नाद सा मसा सू स्वा नानि रु गं रव

इ४ रवं न अूल्यक रवं तिवयाऽन्मस्था रे थिक ञायू ध्या दूस र्वं वृ वे४स व गारे ४श्रे श्रा गुक सहा

मा ॐ ॥ स्वामिन्त्व मिमिमिम्बिगुं ॥ बिनागं सह शीघार्य पृच्छ नाक्षित्रि श्चाक्त कोम म्मा का सुवि ः
मिर्ली म कार्य्य रात्व नापू न ॥ सः र्विकागा य रत्नगौरु व मात्व म कृ भात्र य ॥ पंत्र
मी सा कृ नं रत्न गौ बङ्गा न्य ॥ म म ः यारयन ॥ नं दिह्या लि व मठकार्य ॥ क्षि व लीन
यविध्यॐ पूज्या वार्य्य फ न स्तीयो फ रतीन या र मक्षि कुम ॥ नं ना लि कीं विदकाः
र्दृ र्यी प्रहा पाय न व न सा ॥ मारो मी न्वा क्षि न पापं न थ गा न व बाय पा ॥ न्दू त्तिबु
दृ म न भ्य सा द वर्जी स्व स म य म ॐ प मो स्वा दी र ॐ श्री ॐ गा मि र घ मू स्व ग व ॐ स त्व पुं मि स

नोगान्दनीमनारान्नृकगासुपिवधर्मो तेः ध्ययघथाविश्वारिपिकः४प्रेयपूत्रवच्युसनैमः

मक्षद्विःकस्यानारीवसर्वेवृक्ष नाथिसनेःसमीन्द्राक्षियग।।हूस्माश्यसविधि

४।। ।।गीनापिजौं३।।मगुः लब्रदक्षिश्मकानयम्।।मिष्यश्वेवंलक्षादि

ध्यकनाश्वस्माक्षरूएवींकापि ष्यामिवथाहायपमि।। ।।सूधमसस्वीः

ऊन्नमसहसंजीविनिंवमाज्ञय वृक्षवृःलाजागावृक्षयग्राहशिसौग्रमी।। ।।

क्षुमिनिमिष्यावदनृ।। ।।नगान्दवनामगुसाधिस्तुवबदाक्रिणा।पूजेवी।।गनायुव

श्री

वद्वआलथागथाकदक्षिणश्रीं।। नानासंकालवक्त्रादिन् खशवीर्नविशेषमनमावाक्ष्मश्रीर
सिपुरुदताशीदाशीनथायनं।। दक्ष्वस्त्वि धनक्ष्मन्यादिकावनीमणिमक्रवा।।
दगुलिससयासुशीर्घीदा।। ४।। ।।कुंनिदिक्षाविधिसमाफ।। ।।सुवल
सथक्षालायालयममसंजाय याक्षविय।।गीनजूवलिनि।। ।।श्लोक
।।विश्वींकु विनिण मगुलगणा ॐकाववीजाहवाडक्षणियविषीतिनाथव
वहयामाहुहासायवंडर्मौमालिनिविनागिदक्षिणकवीयाश्रींकसव्यमनीवदश्रीजन

५२

वज्रधातुनमस्कारं मुद्रां सर्व्वदा ॥ ॥ ॥नमो नियत मण्डल त्रयभित्तामरि
महामादिस्थाहित वर्ज्जित कल्याग गणवज्र पूर्व्व कीमण्डल सीसिवज्र यम् ॥ ॥
दिश्वलिंग्रद्यायाम् ॥ यं लां घं ह्लं म ॥ नमः ४ वज्रसूत्रं स्वार्घदल्याग ॥ ॥ओं श्री है
वृकरह्माव कव तत्र कमलाय कानयतः ४ महामुद्रासिद्धि कामनार्थं सूर्य्य प्र
तिष्ठ स्वाहा ॥ ॥नमः ४ वज्रलिंगः मैय विश्वमण्डलत्रिप्रदक्षिणीकृत्य पूर्व्व
नत्रह्लगवदरि मूरवशमगक्रायीत्रिप्रतिज्ञा ॥सूर्यार्घपात्र पविहा नवयोनि ॥ हृ यवनक

मायां॥ कूर्माचं सर्वंसत्वार्थसिद्धिंदत्वायथानूगमशागरूर्धिं आपिविषपीयूनानागसनाय

हूं॥ ॐ आः ४ हूं॥ ॐ त्ववनमहान॥ वकुंविहृ रूत्वनिभिवक्रमात्मन्यकर्त्तोथ॥

श्रु ॥ॐ जुंकावामूरवयोदि॥ ॐ आः॥ हूं मूश॥ ॐ एवाज्ञायनूघशिववादयनूकवरू ५२

ग वजणद्राण्धावमावत्रद्रमाहृ॥ प्रमात्र्गिणनायकस्वर्यालवायपञ्जितिवः

शिवजाहूष्टिमाव्रदत्वायमादिः॥ पीलायपरगू॥ ॥गदत्ता॥ ॐ वजकीलउकी

लयसर्वकीलानूवजधवाहूयाहूं ४ हूं हूं॥ ४॥ ॐ गिवज्रं४ हूं कावमकृणकीलकानूत्याघ॥

ओं बू र स्कू बू र ऋ ल र भि ष्ठ स र्वार्थ सा ध नी त्वा द्ता ॥ ल्कृ भि स्ता ष्ठ भ गं ज फ श्री य भ स्ता य धि क्ता ः

की ल क दं व गा [illegible] वि [illegible] क्ता ॥ ॥ ग न ॰ स र्ह य आ वी ज घं ये ठ र न्या स्मि न्वा घ ट व

कु म ष्ठि ग र ल्वा ग आ या भि द्वा ल या वा स मा मा य प ष्ठ ना द र्भ ज स गी भि वा दि

प्र ध्व ऊ य ट का द्धि पू न ल्कृ गं स ६ स्ता न र्यां गी री न ज ल द्ध द वा नी न भि घ य ॥ ग्म

म या य लि फ श्री न ग ः थे स ष्ठ लं क त्वा य स्र स ष्व घ टं स्छ य य नू ॥ ॥ रा त ना ॥

ग न ॰ य ह वी ज न म्मि रि या ष्ठ स्ध स ष्ठ स स्कृ य स्र स्य व व का ट भ नं ग ग न सीं का शीं वि ऊ व ज ः

घण्टीकिनस्तुॐ वज्राराव अस्त्वाहिरवज्रसत्त्वं पर्वद लक्षून कं उत्पलनेत्रा सूक्षिपञ्चिमग
कार्यं दक्षिण पश्चीं हूं णान सहा यश्रीज्ञानलय शंखपाली नैम लयेक ध्वीटकी वाय
वसुक्षवनकं जून काधिमहा॥ नागयाॐ स्वस्ववर्ण्णभूवाजिर्णनारनध॥ स्तर्प्या ५५
कानसूयत्रिमनूष्यास्थीकता ॐ लिर्नी सफलसश्रा किरहिर्णविश्विन्याणघद्विश्मस्तर्मी
नगश्रस्त्वर्व नागं विध्विन्या॥ज्ञा या धू॥ श्रीला॥ पूजा॥ यृथ्वीन्याभ॥ ॥ॐ वज्रसत्त्वहूं॥ स
र्व्वा॥ॐ ज्ञाश्च नकाय हूं॥ पू ॥ॐ ज्ञा॥ वास्तुकायहूं॥ ज ॥ॐ ज्ञा॥ नक काय हूं स्वाहा॥ य ॥ॐ ज्ञा॥
हाला स्वाल

पद्माय हूं स्वाहा॥ दा॥ ॐ आः महापद्माय हूं स्वाहा॥ ह्रीं शङ्ख॥ ॐ आः शङ्खपालाय हूं स्वाहा
॥ कुहूमे॥ ॐ आः कर्कोटकाय हूं॰ स्वाहा॥ सर्व्व॥ ॐ आः अनन्तवासुकाय हूं स्वाहा॥
वायव्य॥ यं लं घं हूं ॥ जाप॥ वलि॥ वासुक तक्षक आदि नवपन्नग सयक वीखसा
र्थ्य भर्त्सं श्री नवलिंद याव॥ ॥ ॐ अनन्त वासुकि तक्षक कर्कोटक पद्म महा
पद्म शंखपाल कुलिक पाद्देवनी महादेवनी श्री मत्रिशिखि महात्रिशिखि दण्डधर नमः
हादण्डधर भूपाल कुलून व्यायन हस्ता ग नमहा हा गवन फमहा नफश्री कालि महाः

कालिकुल कालिस्वरूप महास्वरूप रुजादिक महादमिलिस महामिलिरु ऊसगउठ
महानागाधिपत सर्वलक्षवरं हूं स्वाहा॥ हूं फिनागवलिमन्त्र॥ ॥यं लां घं
न हृश॥गगाऊव॥ ॥गगर भूवऊः मसर्विगोभ्यमहानागसकाधननीय ४ग
ज मानीविविक्रयनुत्रवाद यम्॥ ॥ॐ घिलि रूं ऊः स्वाहा॥ हूं पितृवाहयम्॥ ॥
गनावऊँनीगक्षघट मदकपूर्व क्रुव धीवानीय मक्षी अपुस्यादिरिठ स्तंपक पूर्णः
वकूहं समानीय वहिर्मा नीगभनी बीजनादि विधिं कुर्यात्॥ ततजलत भान्यर्थ मगुलगृह

दियाऽयम्॥ अमयापालिकव मण्डलं यद्द कमाती पायसं लाभयद्॥ ॥ इतिमण्डलायर्त्त
हानिविप्तिस्मायक॥ ॥नमो ॥ ग्राओगणयक्षं गयाखं नादियथाविधिं कुर्यात्
॥ ॥ ॥लोकाकूत॥

ॐ नमः श्रीवज्रवाराह्यै ॥ अथ सिद्धआशिषकविधिमाह ॥ अधोमुखं मण्डलं कृत्वा यथाविधिवः
दधीनां त्रीविधिवर्णयुक्ता ॥ त्रिसः माणिं वालभयं मामकीसाधनेन वनाधिवासना
सिं दिकां च यन् ॥ ॥ तदनु प्रस्ता यामि च सिद्धमाता हृदयम् ॥ ॥ धीसंवनस्य ४६
मन्त्रय० वावार्यहस्तेमि च सिपूर्वी दवामन्तुं वायिय० नुप्रज्ञा यामि च सिपूर्वी दत्वा ॥
॥ [illegible] दत्वा ॥ धीकुयाचिमा वज्रवाया दीक्षयीस्वयं सम्यनवसूयंविधिस्था ॥ तस्मात्सिद्ध्य
श्रावीज मद्दे मानि मीहान दवमीश्र [illegible] धात्मा या [illegible] ॥ तीन कृता [illegible] ॥ [illegible] सूजरा वमा ॥

वकी कूगुलकागीनूवकामंस्वतार भघ्याऊमंस्वाकास्वामिमाराम्लसंरवैस्वाऊनामाघोम्
थिनूयामाटमिथिदिस्यनप्रहाग     मह्लीमथानीमंप्रुवे [illegible]ओस्वाधियमिणनाम्ब
ऊादिमूडामूगाल्वादि स्वलावाउ     वस्याधिमूस्वा॥स्वायानीयं लं यं स ग॥जाय॥
वलि॥     ॥रूपचलयणगीमव     ऊर॥ओंग्रीवऊददमूकरूंरफ्रऊाथिनीकाल
समाकस्वाहानित्रिजकं॥रश्मा॥     ॥ओं रसर्वंवृक्षऊाथिनीयवऊवरूनीयमऊवेनी
वनीयरूंरफ्रऊस्वाहानित्रिजकं॥यात्रवम्मा॥     ॥ओंधमरस्वा॥वयरमर्दरवजधूकरूंरफ्र

श्रि

स्वाहा॥ ॐ वज्रवैश्वानरीय हूं फट् स्वाहा दनि प्रिजर्पी॥ पत्री॥ शिवशि॥ गन्धदलमनावीनमः

श्रीसुगन्धाया समर्की॥ श्रीवज्रसत्वमुड यैं वदिस्थाल मसं स्थि नी॥ १ ॥ ॐ वज्रपुष्पे समम

यर्न्तं हूं स्व स्क्न्धाधालिक हूं फट् स्वाहा॥ ॐ जी ३ स्न ४ स्न ४ हूं फट्॥ स्कं नि प्रिजर्पी॥ क

उसवर्यं कर्म्भया॥ गन्धदलमना वीन कुमुसलामि नारा समर्की॥ श्रीवज्रसत्व x

॥ २ ॥ ॐ वज्रसूर्य्य समनाविश्वसय समयस्तीं वलधूक हूं फट् स्वाहा॥ ॐ इ स घं व च्छ

किनीय स्कं नि प्रिजर्पी॥ ॥ कण्ठीप्रीवायी॥ गन्धदलमनावीन कण्ठीन नंसं सव समर्की॥

४८

श्रीवज्रसत्व × ॥ ३ ॥ ओं भाग्यवनयवनसमा । श्वतेते फ्हदिजिनाजिकहूं फट् स्वाहा ॥ ओं हः वनमाहि
स्वाहा हूं हा फट् स्वाहा ॥ हूं मित्रिज फ्के ॥ ॥ पूजकदीयाकनयाः ॥ गन्धोदकस्नान
मीवनूयकें भाप्वना स्नकी ॥ श्रीवः उमसत्व × ॥ ४ ॥ ओं हूं जीः यशाधूक हूं फट् स्वाहा
हा ॥ ओं वं हां पां जीं मां जं जीं हूं फट् २ ॥ हूं मित्रिजफ्के ॥ मखसाणेग्नो ॥ गन्धोदकस्न
मावीन मखसाभाघमिथ्यास्नकें ॥ श्रीवज्रसत्व × ॥ ७ ॥ ओं श्री वज्रहृदय हूं कमाः
धि ॥ त्रिजफ्के नो पूर्ववत् ब्रह्मस्तुत्र मगुसाहा ॥ ॥ ओं कामरूप वङ्गे हूं हूं फट् ॥ हूं मि सकेपया

ॐ॥ ॥ॐ नमो भगवती नवी नवी नप्पनाग्रलोदि॥ मन्त्र णमव्रह्माणीत मत्र॥ ॥गृहदक्षः
मनावी नवव्रह्माणीत मनुयात्रर्क॥ त्रीअजमल्ल ४॥ ॥व्रह्माणीत मनुयात्रः
सि छिवाग्मकर्त्तुयना॥ कादिकंदया गु॥ ॥ठक मृत्वादिकी गोमिकाय त्रीवावः ४८
त्रुंवदघागु॥ ॥मनामृत्युमः त्रुंजयगु॥ पृथ्यमाला मादाय स्वर्ग शिव सिद्धान
यना॥ यं वां यं स्तु ना॥ ॥नः भामन्त्रि रि ४ यम राजनीमूर्त्ति कलीगलीस्वाव
हिर्निगक्कुगु॥ ॥मनायमनिकावसिद्याग्॥ ॥ज्यादि॥ ॐ नमः श्री मग्रवणीः

ष्मा य व्याः॥ ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय॥ नमस्तुभ्यं ज्ञानगुरवे ग्रहनविभागान् लान् कामरूपि

त्रात्र्यं दिक्क्रक्रवार्त्तक्रमभिनग | गर्णनक्रूमलणी॥ मऊ हूमे सद्ध वज्रा रवसः

भिवसागवीं गाउवींनाहस्ताकृ | अयथामें वज्र ह्रगव नः ४ यमहू लाध्यवस्त्या॥ सः

पिव॥ यामहाीं स्तावव क्रविअव | यथि मनः ४ हनियाा मम हूँ भाः ४ साभिर्य्यगुस्ताः

दाढिशक्तभिऊगुवँ स्वामिभानि | श्रुमकामाअयुत्या मवर्गं समूदयभिस्र्वे वाय

नाजालमःका कूर्या मर्त्य घूयर्मोभिवसिविनर्यं मः हू ं सर्व्वकाली॥ ॐ नमः ४ य अनर्हे ष्यः

श्रि

आउर ॥ ओं नमः श्री ऋक्ष सत्वनाय ॥ ॥ गीत विश्वसनातन ॥ श्लोक ॥ नमस्कृत्य नमामि

हूं नमानमा हूं स्वाहा ॥ किंचित्‌ स्पयाजग्रहाग्रहण्‌ नाम साय वद्ध प्रहृत्य

गहह सी ॥ क्रमाध्यितनगायायाद मापानायनौ स्कृष्कृ मत्यथानिष्ठ नहं ॥ नियाडे ४९

हं व्यमीजनतानि विंवा मदव्या स्मकं वबगुवीवंधमृदानर्षंद ॥ ॥ गीत

हन्नगिव ॥ ननायमनिकाविसः कैंण ॥ ॥ यायार्घपूजनं ॥ राग ॥ ॥ न्वत्वः

हेमका ॥ श्रीविवाल्य स्वाहि ॥ ॥ गीत एमलि मगुल ॥ श्लोक ॥ यावन्कस्याहि ॥ ॥ गी

वायुकादिना॥ श्लोक॥ नृत्यनाक्रस्य पमध्यामिश्रादि॥ ॥नमः शिव्या॥ ये गुरुभ्यः सका
वध्वनू॥ वसिद्धानंद॥ ॥लाव ला॥ शिर्षे वैभाव नन्तु वन्माव संतत्व नत्वा ठंगिः
वक्त्र क्लज्य प्रजन कन्तुर्ध व्याप: शिवकस्तं आः नक्षः उं कः नवं तु क्षन भिरिक्त
लाध्य वनं व्रीमंनि दृष्ट्या॥ आ या नि॥ यंवगाव्या॥ लाहा शिवज्ञा॥ ॥नमो वः
नमानुसं कलात्तु वन्दमान॥ मूग गान्ध्रूलादि दिकं दसान्॥ ॥ओं वज्र क्ष्मी महं॥
शिवा वस्तु॥ ॥ओं वज्रव सर्व वक्ष आवं यहं॥ ज कवच्य ज॥ ॥नमः श्या द्रमि वशिष्ठः

ध्यावजित्वा ॥ ॥ उत्क्रम नैरात्म्यमयन् ॥ ओं आः स्कुं आदः कूं हूं ॥ ओं आः ४ सर्वं वीरक्षः ॥ क्रूं नियतन ॥ ॥

यमनिकायीयत्कन् ॥ कल्हिं रामू बनयिष्यति ॥ ॥ सिध्याः ५ चिवदन् ॥ समस्तानादं

सि महासुखविनि ॥ ॥ भिनासिवर्द्ध धृत्वा ॥ ओं सर्वं ध्यागविक्रमत्वादयामि ॥ नमः ५ स ७०

दनभ्यां रिंसदक्षा ॥ ओं सूत्रमसम यल्हीं द्वा ४ सिद्धि वज्रपथसुखमिति ॥ ॥ उ

दिवनं धृत्वा ॥ ज्ञेयल्विवज्जवावा: ध्यान्नमिष्टिना लविध्यासवज्ञयंदवज्रवाना

काशयवमनवदस्यमन्तुसत्वविस्मयपवकर्णवयप्रज्ञानयी ॥ ॥ ओं खक्षाआदः कूं दरः ॥

ॐ ह्राः श्वरवीवीमरूं ॥ ह्रूं नियप्रनाकुथ्यय मञ्जिकायक कर्मीप्रवश्या ॥ ॐ मदासूनमसूट्टस्तुमी
श्या तस्वामवजस्वाह्यसिद्धमी ॥ ह्रूं नियप्र नवुदक्रिणयक्री कमाजसिंवकुर्दसकः
मसमच्छमीक्राय ॥ पॅवव नामीक्रा नवयम् ॥ ॐ सर्वतथावजताकपूजायस्फ नायान्मी
नीमिर्याणयामिसर्वतथागतवज ताकाधिष्ठमी ॥ मद्ध ॥ १ ॥ ॐ सर्वतथागतवू
ह्नताकपूजायस्फायात्मानंनिर्याण यानिसर्वतथागतवूह्नताकाधिष्ठमी ॥ पूर्वा ॥ २ ॥
ॐ सर्वतथागतवज्रताकपूजायस्फ नायात्मानंनिर्यातयामिसर्वतथागतवज्रताकाधिष्ठ

श्री ॥ दक्षिणे ॥ ३ ॥ ॐ सर्वतथागतनयसताकपूजाय स्फनाया आत्मानं निर्यातयामि सर्वतथाः
गतनयसताकाभिषिञ्च मां त्राः ॥ पश्चिमे ॥ ४ ॥ ॐ सर्वतथागताभिष्यताक पूजाय स्फनाया आत्मा
श्री नं निर्यातयामि सर्वतथागतवि ष्यताकाभिषिञ्च मां ह्रीः ॥ उत्तरे ॥ ५ ॥ ॐ गुह्यवज्र नमः ३१
पूजाय स्फनाया आत्मानं निर्यातयामि सर्वतथागतवज्रपवित्राअर्थ वज्रवज्रवलीकवामि ॥
पूर्वद्वार ॥ ५ ॥ ॐ गुह्य वज्रवाः दीकुसग्रविघ्नहृदयहृं वजस्य नमूत्वा दयाः
सियनहृ नन त्वीं वजवावा झाः सिद्धि नियवित्राप्यानि जिस नान्या सिद्धिश ॥ नवस्वयर्दनः

हक्ष मगु सस्ययू न गावकद्वी मान सम या य्य थ्यनि ॥ ॥ नि मनि वर्जो धून्ला ॥ जु यन्क सन्मय
वर्जो मूर्जा नी ह्लु न य घदि ल्वसि मेक स्वनिक्रु पान् ॥ ॥ ह्रदि वर्जो धून्ला ॥ थंव ज मल्ल
१ ल्व यँ न घरुद य सस य चाछि ग ४ ॥ नि रिघ्यन क्रर्ण याँजो घदिक्रु यादि मेस मं ॥ ।
म मा का घ यान मा म वी मृरवद या नू ॥ ह्नुंद क्रन व कें या नि सस या नि क्र माद दनुास
मय सीं व क्र ॥ सि चिश यि वजा म्ह ः माद कें ॥ थंव जा म्ह माद क ० ० ७ र्हं ॥ ॥ जि म्रघ
ह नि म का ह्द वग या शिर्य द द क क्रु यादि कें क्रनू ॥ न ल्ल या कर्के व्यी न वल्ल या ह मव में न व्या मा

गविषमायविहारणकासङ्क्रियो। कुलानवकपगनःस्यान्॥ कृनिसमपादककानविधिः
॥ ॥गलङ्ज्ञावेलराबना॥गः गमङ्गि नविलावज्रयोगमालीस्यानदनूमिर्खः
सिं सटिमिगून्वलालक्षनेज्ञाःकानजा मिनालनूर्पनिःस्यामसर्द्वलथागनास्याधिष्टकी ७२
वजसत्वमज्ञावङ्गिलिनिवावयिल्वा गस्युङ्गदिसंजानवजीकस्रङःकाणयीनवृश्रीम
शुसमूर्थनीलस्कृकावंमिनमिवं लवशुक्रवर्कुसकलभाकैवाव्णमशुसौपमि
कशुकुदःकानेकङ्येयंकानजवलल्यमाकाद्वयाकैर्धन्वारनीलामिलमशुसवङ्कवकै

ज्याः८काॱर्वविलाध्यास्वह्रह्रीऊवभ्मिहिश्विरुकायजाग्वजानीयथाक्रमीनत्वरावपूहूंद८

ज्याः८काअक्ष्कर्लीक्षपादघ्यान नस्लघायूमञुलाद्रीपिनेर्वेपविभगनस्लेंका

नूणह्र्नक्षिवणानलमञुलह्र नवक्रुसे८काअश्माशियमानेगिर्घ्येसे८कानन

भिसमूहे८मादञुमिवप्रविर्ध्र ८हूंकासादिवभ्मिरश्मयूर्यनानेमतरुणः

नीवीध्मयान्॥धूपाकृयमूनः८ सनेघश्चीवादयन्॥ ॥ॐजागमोवसयव

ववमजावयपश्हूंदः८ज्याम्से८॥गीनमसहूं॥ञ्जूमिपठनभगधामावर्लयन्॥ ॥कृनार्कया

सि

ॐ हूः अस्य सं भूमिविसर्जनमित्रासिवज्रधृक्स्वाहा॥ हूं ध्यायवेशविधिः॥ ॥नमो मञ्जुस्वाः

हिमस्र्द्वेगि र्घ्यं वज्रप्रेक्तीहस्ते॥ स्वहासहूंमिर ष्ट्वा॥ नहकोःसिगवीनवक्रहृः

श्च वज्रासःस्यधाजमे॥ आक्रिप श्रिवश्यामिचानक्षिति ला यनामसत्यहास्वा॥ अव

मेगुह्रदयसवज्रा क्रिगमकाम शगाहीत्वाश्रीर्यवज्रपदमासिनस्वन्॥ ॥ गं ७२

स्वाहा हूं रस्वा॥ हूं मिपः नुप्रदक्षिणत्रयं कावयि त्वा सत्त्वाभिस्त्वानमिः

निकुर्याम्॥ ॥ हूं सेयमण्डलीसंच्य च्छयाशियग्रवमिनःशायथापूज्यमथवासुद

व श्री नृपः

वमालीकृत्य ज्ञानमानां याहि श्रिचिर्यम्बकस्य गात्रय सिन्धवतो ऊनायाहे क्ष्मनुलाव स्वनाः
हगम्या हृमगुन ॥ ॐ दिमाग्वप    हमिगाद्रवेशांविसिः ॥    ॥ नमः पूर्वगन्धीनाः
मालीयाश्रीकावमाक्त्रिपूष्माणीम्र    मसघपूष्पमालकयमक्तमपूटदयाना ॥ नमस्तु
सीमकमात्रवम्वरगर्व मिनदि    पूर्वीनिक्षियप्रः ॥    ॥ ॐ जांनिष्ठवजहदामहः
वमाम्वनामरात्वकदपीनधिमि    वसार्वसिद्धिमग्रयस्क्रहूंदेहहहदाष्ठ्याषमादी
नहूंयमितकक्रहृमींगसिनायस्व ॥    ॥ मिवमिवक्षीषवापूर्वीपगामिमहामूजासिद्धिः

सि

साक्षनमूर्खवामक्र सिद्धिः॥ उत्कमा॥ गउत्कमासिद्धिः॥ मध्यमा॥ गमध्यमासिद्धिः॥ जुग्मा॥ गस्व
ध्यमासिद्धिः॥ विघ्नस्याणिद्रबवि आतुसमीपक्रिय्रसिद्धिः॥ देवनामीनुखको यँः
स्थ सकाशादिविश्चकर्णाह्मानयी हयार्दवनयानखकमयदियूर्धीयनगिनदाय
स्यासनीयूर्धीयनगिनस्यगकुली तवनिासमुख्सरूतयसिद्धिः॥ यँवसखानवि
॥यानयूलः॥ क्रियघानवयँयानव॒ ॥त्रवववहिँयानकृडसिद्धिः॥ वाक्यनर्गुलसखा
तूवाघ्यायजावलीवहिग्धनाक्रिसिद्धिः॥ मगुलीयाम्यनदर्शयतामक्रजायादिलायना

६४

भायाघप्रस्तावाक्यअसत्यवभनीय॥साच्चयपटनगृक्य॥गगस्कन्दुथ्यंगङ्कीस्वा॥ ॥ॐप्रणि॰
गटक्नलमिर्मवस्मसस्तावलमियo नृलिस्वस्यमिअसिवध्नीयान॥न्हःमिमालाहि॰
मकाविधिश॥ ॥गदवनून्नवड लिघस्याधिपर्गिलसाटअहेनप्रवयसक्नासी
ॐहर्यविरान्या॥वजमल्लस्वर्यल द्यवकृनूघाटनमल्ल॥उघ्याटयमिसर्म्वाक्राव
ठवक्नवनूलमी॥ॐह्मानकनुहॄंथo स्वादा॥न्हमियoनच्चयपटमयमजन॥ ॥हे
वर्जीवन्ग्यर्युक्नादवनामामूमगुलाधियलिमाभयेसर्वदर्गयिलाः॥यूस्वादिलिश्मंयृकादति

[illegible]यथयथ॥ ॥ॐ दशकामगुसीस अनुग्रह्मावंगननसौग्रनि।वं अद्भुकुसजा।णा।मजामगु
[illegible]ग।सौयजामर्वासि चौनी तनमागु।तविथ्यति।वजयमा।अलीसिर्गमगुक्ष
[illegible]कुद्र।[illegible]त्वा॥ ॥ ॥मजमगुसनदामगुसयुविक्षा।दर्दा।यागमगुस
मदामगुसदर्शिना।दर्दा।उक्षमः गुसमदामगुसद्धिक्रिणा।दर्दा।दाथदाथदाथ॥ॐ
[illegible]।[illegible]मगुलयुवम ।[illegible]॥ ॥नदनूदकारिथकार्थगुमानजकि
[illegible]।[illegible]यविद्ध।निथ्यागुनूमगुसकानयिवागुनूमम्भवयम॥ ॥[illegible]

नवूनानाय थादनामना मदृथामसायिएाण र्थायखजजायीदजाहिमा ॥ नासनना॥नगान
जसालिदिगाहृदक्षमनायथिव जहूर्यउयविय्यमि र्थीनयन्ति दीवजधमनूयिवि
लाव्याज्ञा ना नी ॥ द्विकायाथिपान सालाग्निमज्ञा॥न दनुखहः वीजमयूवेमावीगादि
य्यर्थनमथासमाच्चियादवीश्चः मंयूक्षमियामिडवा र्धीविज्ञानामाहयडंडग
ज्ञानायनजिनाजुनाक्रमायथाद रूरूथादद्धमयादि॥नूनिगायसायर्था॥नेरू
थानमेथसयुप्रस्रमायमेर्भनानाग णेउत्रीलयवेमाग्रूनवामथाकर्मिवग्यलजसार्मणनिर्मा

लनड वैर्द्दचीपसमूस्वनप्रवनिर्मनिर्थसटिनिम्नूत्यगानकर्म्मकूंकजानसप्रहलाज्ञानस्त्रूपं॥
श्री स्तानसत्वादिन्नमरिमिश्चपूनर्द्धं ¦ उमुत्वादिमूर्द्धिरिशथ आनिशहूत्वमगानपूर्यद्धि
वैर्श्रावनादिविधासहिगें स्कत्र॥ ¦ ध्वजयनाकाबुंक्रवादिश्रीगन्दस्यद्धुंकमाविद्ध॥ ११५
ह्रिरिशकमकिसत्तवर्जिनवाधि ¦ विलामूनयूंशीनकलनेलेंनिर्थयआनिशह्र॥
ननमहिमियमानेंनूपओवकिदवी ¦ लिशनिर्थगुर्चंस्हटिकमकाशीनिर्मलध्यात्वा॥
॥निम्मह्मनिजवैकलगंधह्वा॥ ¦ ॥यन्मजलसकलसत्वदुदिह्निनत्यसर्वालकसवन

धर्म्मकुलाधिपत्यानि॰शेषदापविद्दनत्यक्तामस्तवस्तुणनङ्करनीलवहुणमवस्त्रमागिसिमधकः॥ लक्ष्मी

धवः॰श्रीवनपर्द्धनाराक्षिप्तलाकना | थश्रिमसप्रहीण॰शयुद्धाविवृजाश्चजयपद्मनयस्कम

गिलीतवनुगणश्रोक्षिकवनकवायय॥ | गनायदिस्त्व॰प्रवतलुक्षीयस्मश्वानमंत्रिलाकवनद

वयूक्ष॰धर्म्मालक्ष्मेवश्रोक्षितयवः | प्रज्ञानीनन्मकुलीतवतुणाक्षिकवनक्रवाय॥ सद्धः

म्मयुक्त॰धृनमकुलाय॰संधानदृ | वासूवयदक्षिणीय॰शय॰श्रीनिवासश्प्रवशागण॥

नीलन्नक्रलीवंहेतुणश्रोक्षिकवाअक्रवाय॥ हुं इति गाथयानलकलसंभदकीलाकेर दयालु॥

नचू शिघ्र [illegible] नदिन म [illegible] नी धूला [illegible] ॥ ॥ नमा [illegible] काना धि

शिगीजनं [illegible] ना आ [illegible] धीग [illegible] नीमहानम [illegible] की [illegible] लं पूर्धा॥ नय [illegible]

[illegible] हीगवाधि विक [illegible] नूदनमपन [illegible] वव ऊँ [illegible] लिलसि [illegible] ७१

[illegible] ॥ ॥ऊँ नमः [illegible] [illegible] व [illegible] नालिम [illegible] सिलि [illegible] मिम [illegible]

[illegible] राहमा सुरि [illegible] मा [illegible] ऊँ [illegible] कनाम [illegible] नीद नामिम [illegible]

[illegible] ॥ ऊँ [illegible] नाशिपि [illegible] मही ॥ [illegible] मिम [illegible] शिपिः [illegible] ॥

॥[illegible]॥ ॥[illegible]

[illegible]कादि सिद्धबा [illegible]॥ ॥[illegible]

[illegible]यादि[illegible]॥ [illegible]

[illegible]॥ ॥[illegible]

[illegible]॥ [illegible]॥ ॥[illegible]

[illegible]

प

नाविकल्पमास्यानवसव्वाहूत्रालाकालाविवानशं विनदिताताकादिकायाजवः॥ निर्म्मा
णादिद्धिनगमजुलगमाकाया लिवर्ज्जवलाक्कालवलसनाक्लामूगसवासूआ
सि ज्ञसूत्रायमाःविज्ञावृद्धकदम्बव दहालियाक्वात्रयाहदलिहानन्दालसिनाईः ३८
णसद्दृबजआआसदिक्यायनरि ॥अजरीकनलीसयालिजयदाइलालिनाविश्व
हृति गंहृनिमहासरव्वविनजय नृसीनंखवाध्यदयाम्भृत्ताजायगभायिनिवंशि
पदंश्राद्धाविधनजयायागाजागहृदवर्यवसहजानदायवदामाहा॥ ॥ॐकायः॥सम

मर्कैसिचाबाञार्षकुष्कयादेर्मर्ष्यकार्हिकानामीधूत्वाबाकयथामिमवागह्यानाकाबायोयान

॥दयानूमसह्लीदीकामैंबाबादी शद्वकैर्हिमैं॥ ॥दँगुतैसंसयो॥गुनकार्हे

धमाविचानूमीबामर्प्रकासिन शसीबामयाबगकुनीबजसह्वुदसिनी॥कर्हेभः

नीविना।नीकायावप्राकाकुमान हि॥गुलो॰सर्व॰द्रुपूर्ष्रुयिना॥गुनूलवयाबगा॥।

॥ ॥दँगुसिसमयां॥ज्ञानीर्बा दा॥वूर्हेकनग्यहनं॥वसिविमर्जन॥ ॥८

मकाह्र॥सादिवंकर्ष्यबू॥ ॥ ॥ओंनमःश्रीबजदयो॥नेवानलसनसार्हेइका

नमाधार्हे ... प्रियान्नमामि ... ॥ सूत्र ... महाकाश ... प्रग्निसम ... रि
मर्के ... शिशायपालीहा दि ... धान्द्रासकाल ... द्रियान्... सादेवीधनस ... व
जेसखसमा नवात्र ... सर्वा ... काल्कजग्नतैयिलै ... ॥ ... मिया ॥ ... हीमा ति
... श्यादोवश्रा वेव ... नहस्ते कंकेलाबा थददह ... नावकादवे नयाक
लीआ आर्य ... पात्रिमा ॥ सुभर्य ... सुखे ... चार्मी ... उत्स ... कुमी ॥ आनार्य ...
हे नाथसर्द ... सार्थकाव ... नाजदानमहासुखशिक्षितानु ... धिपञा ॥ सूर्य ... पंलाघं ...

द्ना देवनधि ह्रीं ॥ जयाओं जुप्दयथा तुञ्ज सूनतिद जांजीं ह्रीं ॥ य स्त्रास ईस्वाने यं स्तां
धं ह्रं नाथ ह ख वान ज्ञजनय हूस्ता त्रां ज्ञ अंजुमयाजांजीं जीं कं हूम क्रां हूं न्या र ह्वं
श्रि कां ॥ क्रम्मगारसक्षु क न ॥ ओं जूप्य दांतं प्रक्षि ॥ यनजऊ मावनामोतनक ॥ ओं ह्रौं ५०
ईर्वदयनामिर्द ठुह्रा ॥ स्स्रुह्रक्ष वाह्रायका ॥ गीतका ह्रौ ॥ ओं सिमि मजा कास्हु
ओंदद्ध लाम द्धाक्ष्मि वाक्ष्यद दं ॥ ॥ जूमव क्षुन्न नीं क्षिहाने क्षिम्र गाम
मा ॥ स्ता स्त्रनाः हदक्षि न दुउठ क्ष स्वामि कऊ ॥ यम ठम्रेश्व ब्रस्य ठठ क्षत्रांजि ननांपिद्वा ख

शजमहस्म विक्र्वायुमहावसा॥का नस्वरु त्रिश्वैवत्र्कस्तु हर्ष्यारयाग्नाइच्छायाशर्षेवनोस्व
च्छवनदापवनस्ले आ॥धर्म्मनाजा॥ नानाः स्थाग स्थ्यौसनाः कैं नसाः त्रयपत्रिंशद्धिनाय
वाज्काः निस्तानिविनशामस्दनाग हिनायद्वयानमान नशवाः रु नशनिर्म्माण नमिद
वाम्लस्तुचा वाशा श्वयहिनाशानाः मिः त्रिताकाः नुस्तासूदाः नुनिवाभिः काः नाउद्वी
क्रिनास्लाहिनानियविःमाउका। लोजरेस्वलाः नाश्वलनागुल्मरनादेवशामुद्भः
नार्ल्भिहिः नासजबिनसायामूयागनः सुस्रि श्वमिनिर्म्मणाश्वजवलयाः स्तपानवाश्चर्मसम्नान्

गाय वई रोर्ऊ यागना न्वया॥ इवं ग मानि न्या सा। अय्व ल्हाक वी निवा। हि नभल्या हि मुस्वी हि ना यअ सायू
सि मनि नि न्वा हि नभाद भह्ल मी थवा नाथम्या य्यो ल्हा जनस्हा पूवी॥ यि हि मो हा मनि थाम
ल्सु यवब्हह मयुसं॥ स्वहि निवा क्वा दियथ्वनि मिर्ल अब्दुयनु॥ मि मा कृ मिच्छ स्वा हा॥ ७१
धनमियाव॥ जिस्वजव्ता श्रीं ल्हुया॥ पूर्ह्वी इय॥ ह्ल्ला पान स्वमध्विर्यं वा कृ॥ दिन स्वं
इया॥ वं लां घं ल्हु ना॥ मना कुन॥ भा॥ लिग्रह ण॥ मम ठकसा॥ निपू जा॥ मिथ्या विना सनकृ
य्यानु॥ फफां हृनि॥ कजणादियथ्वा विधिं कर्य्याम॥ स्वनाका कम॥ ॥ लुं॥ दि दिक्षा विध्वनसमाफ्त॥ स्वरी॥

गमय वईसेर्ऊयागमा न्वय॥ इनंग मानिवासा मग्रलकबीनिवाहिनठस्नुहिसस्वोह्नि गायअसामू
मनिनिवाहिनथाद मलसी न्वथा — थाथक्षूर्य्याक्षाजनस्तापूर्नायिहिंगोहासनिथान
सि ह्नूयवन्हदमवुसं॥ स्वह्निवाक्षा — दियथ्वनिरिलंअरुपग्राभिगाकूनिहूस्वाह॥ ८१
थनाभियावजिस्वजक्वा, र्थेसुय॥ — पूर्हीइय॥ मूलापानसश्वमथिर्थवा कुशादिनस्थे
इय॥ वं लां घं स्फु ग॥ मनाकनं॥ भ — लियहग॥ मनठकसा॥ निपूजा॥ भियाविवासनकु
र्य्यामू॥ पर्वोहनि॥ दकशादियथ्वाविधिंकुर्य्यामु॥ स्ववाकाकन॥ — ॥ ह्नूंनिदिक्षाविधनसमाप्त॥ स्वसं॥